IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रउ्र्लत वड्र्ट ऋद्य ह्ध्उश्रत्रे

'ॢ्रिऋउं उत्र हूॅउं

र्व०,उइउ ख्उक्ष्ंफ ए 'क्ष्टंउए टीहतइ डउौफ'

जो बदलाव तुम दुनिया में देखना चाहते हो, वह खुद में लेकर आओ –महात्मा गांधी

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे मै कहा था कि "भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़–मास से बना ऐसा कभी
धरती पर आया था|" गांधी दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के ड्डष्टिकोण से भारत और दुनिया की बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई| उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित पर ज़ोर दिया और साथ भर में हाशिये और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया| साथ ही महात्मा गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे– मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया|

जब गांधीजी का जन्म हुआ, तब देश में अंग्रेजी हुकूमत का साम्राज्य था | यद्यपि 1857 की क्रांति ने ब्रिटिश सत्ता को हिलाने का प्रयास किया था, परंतु अंग्रेजी शक्ति ने उस विद्रोह को कुचल कर रख दिया | अंग्रेजो के कठोर शासन में भारतीय जनमानस छटपटा रहा | अपनी इ्ǔछाओं की पूर्ति के लिए अंग्रेज किसी भी हद तक अत्याचार करने के लिए स्वतंत्र थे | देश की नई पीढ़ी के जन्म लते ही ब्रिटिश हुकूमत गुलामी की जंजीरों से उन्हें जकड़ रही थी | लगभग डेढ़ दशक तक अंग्रेजों ने भारत पर एकछत्र राज्य

जब गांधीजी की मृत्यु हुई तब तक देश पूरी तरह से आज़ाद हो चुका था| गुलामी के काले बादल छँट चुके थे | देश के करोड़ो मूक लोगों को वाणी देने वाले इस महात्मा को ने अपने सिर–आँखों पर बैठाया | इतिहास के पन्नों में गांधीजी का योगदान स्वर्णाक्षरों में लिखा गया| गांधीजी का जीवन एक आदर्श जीवन माना गया| उन्हें भारत के सुंदर शिल्पकार की संज्ञा दी गई| उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए देशवासियों ने उन्हें राष्ट्रपिता की उपाधी दी|

स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के योगदान को भुला पाना एक है टेढ़ी डर है| ब्रिटिश हुकूमत को नाको चने चबवाने वाले इस महात्मा के कार्य मील का पत्थर साबित हुए| देशवासियों के सहयोग से उन्होंने वह कर दिखाया, जिसका स्वप्न भारत के हर घर
में देखा जाता था, वह स्वप्न था – दासता से मुक्ति का, अंधेरे पर की विजय का| गांधीजी के निर्देशन में देश के करोड़ों लोगों ने आततायी शक्ति के खिलाफ़ अपनी आवाज बुलंद की थी | वे अपने आप में राजा राम मोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, इस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, दादाभाई नौरोजी आदि थे| वास्तव में उनका व्यक्तित्व इन सभी का मिश्रण था | उनके विचार–चिंतन में सभी महापुरुषों की वाणी को शब्द मिले थे | इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय राजनीति के फलक पर ऐसा नीतिवान और कथन–करनी में एक जैसा आचरण करने वाला नेता अन्य कहीं भी दिखाई नहीं देता |

गांधीजी ने हमेशा दूसरों के लिए ही संघर्ष किया| मानो उनका जीवन देश और देशवासियों के लिए ही बना था| इसी देश और उसके नागरिकों के लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया| आने वाली पीढ़ी की नजर में मात्र देशभक्त, राजनेता या राष्ट्रनिर्माता ही नहीं बल्कि उनका महत्व इससे भी कहीं अधिक होगा | वे नैतिक शक्ति के धनी थे, उनकी
एक आवाज़ करोड़ों लोगों को आंदोलित करने की क्षमता रखती है| वे स्वयं को सेवक और लोगों का मित्र मानते थे यह महामानव कभी किसी धर्म विशेष से नहीं बंधा शायद इसीलिए हर धर्म के लोग उनका आदर करते थे| यदि उन्होंने भारतवासियों के लिए कार्य किया तो इसका पहला कारण तो यह था इस पावन भूमि पर जन्म और दूसरा प्रमुख कारण कारण उनकी मानव जाति के लिए मानवता की रक्षा करने वाली भावना थी|

वे जीवनभर सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते रहे| सत्य को ईश्वर मानने वाले इस महात्मा की जीवनी किसी महाग्रंथ से कम नहीं है| उनकी जीवनी में सभी ग्रंथों का सार है| यह भी सत्य है कि कोई व्यक्ति जन्म से महान होता| कर्म के आधार पर व्यक्ति महान बनता है, इसे गांधीजी ने सिद्ध कर दिखाया| एक बात और वे असाधारण प्रतिभा के धनी

नहीं थे । सामान्य लोगों की तरह वे भी साधारण मनुष्य थे । रवींनाथ टैगोर, रामकृष्णा परमहंस, शंकराचार्य या स्वामी विवेकानंद जैसी कोई असाधारण मानव वाली विशेषता गांधीजी के पास नहीं थी। वे एक सामान्य बालक की तरह जन्मे थे| अगर उनमें कुछ भी असाधारण था तो वह था उनका शर्मिला व्यक्तित्व । उन्होंने सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलकर यह संदेश दिया कि आदर्श जीवन ही व्यक्ति को महान बनाता है।

यहाँ यह प्रश्न सहज उठता है कि यदि गांधी जैसा साधारण व्यक्ति महात्मा बन सकता है, तो भला हम आप क्योंकि नहीं उनका संपूर्ण जीवन एक साधना थी, तपस्या थी| सत्य की शक्ति द्वारा उन्होंने सारी बाधाओं पर विजय प्राप्त की| वे सफलता की

एक–एक सीढ़ी पर चढ़ते रहे| गांधीजी ने यह सिद्ध कर दिखाया कि Sढ़ निश्चय, सŭची लगन और अथक प्रयास से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है । गांधीजी की महानता को देखते हुए ही अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहा था कि, आने वाली पीढ़ी शायद ही भरोसा कर पाये कि एक हाड़ –मांस का मानव इस पृथ्वी पर चला था ।

सचमुच गांधीजी असाधारण न होते हुए भी असाधारण थे| यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड के लिए गौरव का विषय है कि गांधीजी जैसा व्यक्तित्व यह हाँ जन्मा । मानवता के पक्ष में खड़े गांधी को मानव अलग करके देखना एक बड़ी भूल मानी जायेगी| 1921 में भारतीय राजनीति के फलक पर सूर्य बनकर चमके गांधीजी की आभा से आज भी धरती का रूप निखर रहा है| उनके विचारों सुनहरा विश्व कोने–कोने में रोशनी बिखेर रही हैं । हो सकता है कि उन्होंने बहुत कुछ न किया हो, लेकिन जो उसकी उपेक्षा करके भारतीय

स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नहीं लिखा जा सकेता ।

सत्याग्रह का सुत्रपात

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति बड़ी ही दयनीय थी| उनके पास ना वोट था और न विधानमंडल में उन्हें कोई, प्रतिनिधित्व प्राप्त था| दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद चरम पर था| 11, सितंबर 1906 जॉन्सबर्ग के एंपायर थिएटर में बैठक हुई| गांधी जी ने मुख्य प्रस्ताव तैयार किया और भारतीय समाज ने संकल्प लिया कि कि वह इस अत्याचार का डटकर मुकाबला करेंगे| बैठक इस दृढ़ प्रतिज्ञा को लेकर समाप्त हुई कि वे कानून के सामने विरोध के इस स्वरूप को गांधीजी ने प्रारंभ रेजिस्टेंस कहा और इसका अर्थ समझाया कि पैसिव रेजिस्टेंस व्यक्तिगत यात्राओं के माध्यम से अपने अधिकारों की प्राप्ति का तरीका है| धीरे–धीरे गांधी जी को लगा कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का जो रास्ता वे अपना रहे हैं उसके लिए इस शब्द का उपयोग करना उचित नहीं है| अत: उन्होंने इंडियन ओपिनियन के माध्यम से इसका स्वरूप जानना चाहा, थोरो ने इसे सिविल डिसः ऑबेडिएंस अर्थात सविनय भंग का नाम दिया उसी के लिए मगनलाल गांधी सदाग्रह शब्द शब्द सुझाया गांधी जी ने सदाग्रह को बदलकर सत्याग्रह कर दिया| गांधी जी ने सत्याग्रह को कर नामों से पुकारा है जिससे सभी अंधकारमय ताले खुल जाते हैं| यह अक्सीर इलाज लाज हैं भीषण से भीषण रोगों को दूर कर सकता है| यह सर्व संकट निवारण संजीवनी बूटी है| यह यज्ञ जिससे आत्मशुद्धि होती हैं| सत्य ही ईश्वर है और अहिंसा द्वारा सत्य का अविरल अनुसंधान ही मेरे जीवन का उद्देश्य| इसी उद्देश्य की पूर्ती के क्रम में गांधी जी ने उस साधन को जन्म दिया है| जिससे संक्षेप में सत्याग्रह कहते है|

सत्याग्रह का अर्थ

साहित्यिक Sष्टि से सत्याग्रह एक संयुक्त शब्द है जो सत्य और आग्रह शब्द को मिलाकर बना है| इसका अर्थ है सत्य आग्रह करना व्यक्ति सत्य समझता है उस पर जीवन पर्यंत डटे रहना| यह सत्य पर आरूढ़ रहकर बुराई का विरोध हैं जो कुछ असत्य हैं उसका विरोध करना ही सत्याग्रह है| हर परिस्थिति में सत्य पर डटे रहना सत्याग्रह किसी एक पक्ष की विजय और दूसरे पक्ष की पराजय नहीं है| बल्कि सत्याग्रह केवल एक ही चीज पर अडिग है वह है सत्य की विजय और असत्य की पराजय यही सत्याग्रह का प्रमुख उद्देश्य है|

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह जीवन का शाश्वत नियम है| सत्य वर के माध्यम से ही ढूंढ सकता हूं| सत्याग्रह ग्रह का अर्थ सत्य से लगाव एवं असत्य अथवा असहयोग की भावना है| सत्याग्रह एक नैतिक शस्त्र है|

सत्याग्रह का मतलब है सत्य के लिए आग्रह जिसे दूसरे शब्दों में सत्य की रक्षा ' लिए अहिंसक संघर्ष भी कहा जा सकता है| स्वयं गांधीजी शब्दों में सत्याग्रह की अर्थ सत्य में लगे रहना या शक्ति को धरातल पर ले जाना है और इसके द्वारा गलत रास्ते से उचित रास्ते पर लाना है|

गांधीजी के मतानुसार सत्य ही आत्मा है व्यक्ति को हमेशा सत्य पर अडिग रहना चाहिए उसको किसी भी परिस्थिति में सत्य की भूमिका से पीछे नहीं हटना चाहिए| गांधी जी ने अपनी संपूर्ण अहिंसक कार्य पद्धति 'सत्याग्रह' का नाम दिया| उनके लिये सत्याग्रह का अर्थ सभी प्रकार के अन्याय, अत्याचार और शोषण के आत्मबल का प्रयोग करने से था| गांधी जी का कहना था कि सत्याग्रह को कोई भी अपना सकता है उनके विचारों में सत्याग्रह उस बरगद के वृक्ष के समान था जिसकी असंख्य शाखाएं होती हैं| चंपारण और बारदोली सत्याग्रह गांधी जी द्वारा केवल लोगों के लिये भौतिक लाभ प्राप्त करने हेतु नहीं किये गए थे, बल्कि तत्कालीन ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध करने हेतु किये गए थे| सविनय अवज्ञा आंदोलन, दांडी सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन ऐसे प्रमुख उदाहरण थे जिनमें गांधी जी ने आत्मबल को सत्याग्रह के हथियार के रूप में प्रयोग किया|

सत्याग्रह एक सौम्य वस्तु है जो कभी चोट नहीं पहुंचा सकता उसके पीछे क्रोध या द्वेष नहीं होना चाहिए। उसमें शोरगुल प्रदर्शन या उतावलना नहीं होता है। वह जबरदस्ती से बिल्कुल उल्टी चीज हैं उसकी कल्पना हिंसा से उल्टी है परंतु हिंसा का स्थान पूरी तरह भर सकने वाली चीज के रूप में की गई अहिंसा तथा प्रेम से मानव की गरिमा प्रतिष्ठा तथा व्यक्तित्व और उच्चतर हो जाता है। अहिंसा का प्रयोग गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्य अहिंसा का सिद्धांत विवेचन उसके व्यवहारिक सदुपयोग के अभाव में व्यर्थ हैं अतः उन्होंने प्रयोग के आधार पर अहिंसा के पालन के ढंग को विकसित किया तथा उसे उन्होंने सत्याग्रह नाम दिया।

सत्याग्रह की मूल भावना यह है कि अपने विरोधी का दिल अपने आचार और अपनी सहनशक्ति से जीता जाए। सत्याग्रह का आधार आत्मिक या आध्यात्मिक शक्ति है इसलिए गांधी जी ने कहा हट प्रत्येक सत्याग्रही का ईश्वर विश्वास हा आवश्यक है ईश्वर में उसके विश्वास का अर्थ है कि उसे यह विश्वास दे कि बिना ईश्वर की मर्जी के पत्ता सकता।

प्रोफेसर एन. के बॉस के शब्दों में –सत्याग्रह अहिंसक तरीको द्वारा युद्ध का संचालन करने का तरीका है।

सत्याग्रह की बड़ी अनूठी महिमा है सत्यागह ऐसी तलवार है जिसके दोनों तरफ धार हैं उसे जैसे चाहे वैसे काम में ले उसको कार्म में लेने वाला और जिस पर काम में लाई जाए होते हैं। बह खून नहीं बहाती पर घाव गहरा करती है। उस पर जंग नहीं लगता और न ही उसे कोई चुरा सकता किसी ज्ञानी कहा है की भगवान के का भी असर वरदान के समान कल्याण प्रद होता है। सत्याग्रह का मार्ग भी ऐसा ही होता है

सत्याग्रह का उद्देश्य

जब किसी राष्ट्र एवं समाज की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था इतनी अस्त–व्यस्त हो जाए की उसमें सामान्यतः सुधारात्मक असंभव परिस्थिति में क्रांति का उदय होता है। क्रांति दो प्रकार की होती हैं। हिंसक क्रांति एवं अहिंसक क्रांति। गांधीजी के अनुसार क्रांति का तात्पर्य विध्वंस ना होकर परिवर्तन नि ति अर्थात राज्य की अनैतिक शासन व्यवस्था में नीतिगत सुधार इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही गांधी जी ने आंदोलन को अपनाया। सत्याग्रह ऐसा निरंकुश एवं अनैतिक शासन व्यवस्था का अंत करता है चूंकि हिंसक द्वारा अन्याय का ही करना अपने आत्मबल नीति बल को कमजोर करना होता है। इसलिए गांधी जी ने तय एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का आविष्कार किया।

गांधीजी के मत में सत्याग्रह मानव भातृत्व की भावना पर आधारित हैं। उनके अनुसार संसार के सभी मनुष्य परस्पर भाई भाई हैं। गांधी तो जीव विज्ञान के सिद्धांत जीवन संघर्ष को मानते है और न ही हॉब्स को सबका सबके विरुद्ध संघर्ष को ही स्वीकार करते हैं। बजाय इनके वह प्रेम, सहयोग और पारस्परिक सहायता को ही सामाजिक व्यवहार और मानव प्रगति का मल आधार मानते हैं। वेदांत के सिद्धांत को भी स्वीकार करते हैं कि सृष्टि में सभी प्राणी एक ही सूत्र में आबद्ध हैं। वे ईसाई मत सहमत हैं कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य है। सच तो यह है कि आम लि समाज गांधी जी कहते है के रूप में स्वीकार करते हैं।

सत्याग्रह के बारे में गांधीजी कहते है इसका प्रयोग व्यापक रूप से सामाजिक कल्याण होना चाहिए न कि लाभ अथवा स्वार्थपूर्ति। जो सदैव अपने स्वार्थ सिद्धि में लिप्त रहता है और सामाजिक हित के लिए अपने व्यक्तिगत हितों का त्याग नहीं करता। वह सत्याग्रह होने के योग्य नहीं है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए किया गया और अहिंसा हितों का त्याग नहीं करता वह न होने के योग्य नहीं है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए किया गया और अहिंसात्मक प्रतिरोध वास्तव में सत्याग्रह नहीं है क्योंकि इसमें सत्याग्रह की मूल उद्देश्य सामाजिक कल्याण एवं मानव मात्र की सेवा की उपेक्षा होती है। इस दृष्टि से जो लोग स्वार्थ सिद्धि के लिए समय–समय पर तथाकथित व लिद करते रहते हैं वह गांधी जी के इस महान सिद्धांत का दुरुपयोग करते हैं। सच्चा सत्याग्रही अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं अपितु सामाजिक कल्याण में बाधक बुराई का अंत करने के लिए, सत्याग्रह करता है। अपनी इसी मान्यता के कारण गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका तथा भारत मैं अन्याय और अत्याचार से पीड़ित लाखों व्यक्तियों के लिए कल्याण संबंधी व्यापक के लिए ही सत्याग्रह का प्रयोग किया था।

गांधीजी के विचार में एक सत्याग्रही को उद्देश्य के प्रति पूर्ण जागरुक एवं सुनिश्चित होना चाहिए। सत्याग्रह करने वाले के मन में किसी भी प्रकार की कुटिल भावना गुंजाइश नहीं। उसे किसी भी प्रकार के छल का सर्वथा त्याग करके अपने आचरण के अंदर कथनी और दर एकता रखनी चाहिए। उसे पूर्ण होना चाहिए एक सत्याग्रह का उद्देश्य अपने विरोधी को उसकी गलती का भाव कराकर उसके अपने आचरण सुधारने के लिए प्रेरित करना होता है। सत्याग्रही अपने आचरण द्वारा अपने विरोधी के अंतःकरण में छिपे श्रेष्ठ भावों को जगाने की दिशा में प्रयत्नशील होता है। दुराचार को सदासार से, दुष्टता को प्रेम से, क्रोध को अक्रोध से, सत्य को असत्य से, हिंसा को अहिंसा ईसा से दूर करना उसका प्रमुख ध्येय है। इसलिए गए मु ष्य सत्याग्रही हनेका दावा करता है उसे आत्म निरीक्षण देख लेना चाहिए कि क्या वह क्रोध,द्वेष आदि न विरोध करता है क्यों स्वयं उन विकारों रा मुक्त है या नहीं इस प्रकार सत्याग्रही में इस सत्य रूपी आने वाली समस्याओं को स्वीकार करने का साहस ना चाहिए।

सत्याग्रही के लिए दुःख सहन करने की कोई सीमा नहीं है। भयंकर शारीरिक तथा मानसिक कष्ट पहुंचाए जाने पर भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता है। और अहिंसा एवं सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होता है। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए असहनीय कष्टों को स्वीकार कर लेता है किंतु वह अपने विरोधी के अहित की कामना नहीं करता और ना उसके साथ प्रकार का छल कपट करता है। सत्याग्रही का यही आत्म त्याग उसके विरोधी में मानवता की भावना को जागृत करके उसे ससे इतना अधिक प्रभावित कर लेता है कि वह स्वेǔछा से बुराई का अंत करने के लि तैयार हो जाता है। इसे से लक्ष्य की पूर्ति की पूर्ति के लिए सत्याग्रह इ्य कष्ट सहन क का विशेष महत्व ढीता इसी के द्वारा वह अपने थी क को ᶊदय कर को छोड़ देने के लिए ᶊष्टि से प्रेरित करता है। तथा उसे अपना सहयोगी बना लेता है।

सत्याग्रही सभी परिस्थितियों में और सभी रूपों में सिद्धांततः हिंसा का ता परित्याग करता है। वस्तुत एक सत्याग्रही को मानव स्वभाव और उसकी अǔछाइयों में अत्यधिक विश्वास और प्रेम इस ध्येय को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। इस प्रकार सत्याग्रही सेवा और कष्ट के माध्यम से के हृदय तक पहुच जाता है क्योंकि और बुराई के बुराई को दूर करने के लिए हुआ हैं बुराई करने वालों का नाश करने के लिए नहीं यह न केवल अन्याय और बुराई की प्रतिकार का अस्त्र हैं एक पद्धति भी हैं। जीवन की अनेकता में जो एकता होती है। सत्याग्रही उसमें संपूर्ण आस्था रखता है।

सत्याग्रह एक अध्यात्मिक तरीका है, जिसमें अत्याचारियो के विरुद्ध कोई द्वेष भावना न रखते हुए अपनी अंतरात्मा की आवाज का अनुसरण किया जाता है और किसी भी परिस्थिति में सत्य के प्रतिपादन से पीछे नहीं हटा जाता है।

सत्याग्रह का उद्देश्य है अत्याचार का अंत करना अत्याचारी का नहीं इस आदर्श

की पूर्ति भी ही सकती है जब व्यक्त रतिया वहा सा के मार्ग पर चलें। यदि व्यक्तिगत जीवन में सत्यग्रहवादी और अहिंसावादी। अहिंसावादी सालादी नी बन सकता। सत्याग्रह के सार्वजनिक प्रयोग से पहले आवश्यक है कि व्यक्ति अपने का गट कर देख ले और उस पर विजय प्राप्त कर लें। आंतरिक चरित्र के अभाव में सत्याग्रही म प्रभावहीन । यदि सत्याग्रही

त्याग्रही इसमें तरफ का सहारा ले तो वह सफल नही सकता। इसी कारण सत्याग्रह के लिए तर्कबुद्धि, बुद्धि की अपेक्षा दुख सहन की क्षमता को अधिक महत्व देते हैं इस संबध में उन्होंने स्पष्ट कहा है कि यदि आप वास्तव कार्य करना चाहते हैं तो उसके लिए केवल को संत ष्ट करना पर्याप्त अंतर्मन को प्रभावित करना बहुत आवश्यक है। ३ हमारे प्रभावित करती हमारा अंतर्मन दुख से प्रभावित होता है इसी कारण अपने अत्याचार के फलस्वरुप सत्याग्रही अधिक दख सहन करता है उसके शुभ लक्ष्य यर्त की संभावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है। इस ᶊष्टि से गांधीजी के विचार में सत्याग्रही द्वारा डर सहने की इǔछा और क्षमता का विशेष महत्व है।

परन्तु यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि सत्याग्रही द्वारा अपने दुख का प्रदर्शन करना गांधी जी की ᶊष्टि में अनुचित एवं निंदनीय है । उनके अनुसार सǔचा सत्याग्रही ही वही है जो द्वारा किए गए सभी कष्टों की मौन न रहकर सहन करता है और उनका प्रदर किए बिना अपने लक्ष्य की पूर्ति का प्रयास करता है। विरोधी के समक्ष अपने दुख का प्रदर्शन करना एवं उससे लाभ उठाने का प्रयास करना वास्तव में सत्याग्रह की मूल भावना के के विरुद्ध है। सत्याग्रही ग्रह, अपने विरोधी को इस बात के लिए विवश अथवा प्रेरित पी नही करता कि वह उसे कष्ट पुचाएं चाएं वह केवल सभी को नम्रता पूर्वक मौन् भाव से सहन करता है जो उसके पा उसे दिए जाते हैं। गांधी जी कहते हैं करना का उद्देश्य स्वयं दुख सहन करते हुए अपने स्नेह, तथा आत्म त्याग द्वारा विरोधी का हृदय परिवर्तन करना ही होता द्य अपने कष्टों का प्रदर्शन करना नहीं । जब सत्याग्रही सभी प्रकार के दुख
झेलते हुए शांत रहता है. और प्रतिशोध लेने के पर्यत्न नहीं करता है। तो विरोधी का वास्तविक बल प्रभावहीन हो जाँता है। गांधीजी के चाहिए सत्याग्रही का यही प्रमुख उद्देश्य होता है और उसको इन सभी बातों का अपने जीवन मे अनुसरण करना चाहिए।

सत्याग्रह का स्वरूप

सत्याग्रह की खूबी यही है कि आदमी को इसकी कहीं बाहर जाकर खोज नहीं करनी पडती, वह उसके सामने खुद आ खडा गा स्वयं सत्याग्रेह के सिद्धांत में ही यह हा अंतर्निहित है बातें गोपनीय रखने की होती हैं और न जिसमें धूर्तता तथा असत्य के लिए कोई स्थान होता है वि प्रकट हो जाता है, और धर्मनिष्ठ व्यक्ति उसके लिए सदा तत्पर रहता है।

संघर्ष बाकायदा योजना तैयार करनी पडे, वह धर्मसम्मत संघर्ष नहीं माना जा सकता। धर्मसम्मत संघर्ष में तो ईश्वर स्वयं अभियानों की योजना बनाता है और लडाइयों

का संचालन करता है। धर्मयुद्ध केवल ईश्वर के नाम में लड़ा जा सकता हैय सत्याग्रही जब स्वयं को बिलकुल लाचार अनुभव करता है, टूटने होता है और उसे चारों ओर पूर्ण अंधकार दिखाई देता है, तब कवर उसकी मदद के लिए आ पहुंचता है। सत्याग्रह पर अमल करते हुए गांधी जी ने बताया कि सत्य के अनुकरण में पर हिंसक वार करने की नहीं है, बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूति से अपनी गलती को दूर करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए । बात यह है कि कोई चीज जो एक आदमी गली वहीं दूसरे को गलत लग सकती है। और, धैर्य का। इस प्रकार, सत्याग्रह के का अर्थ हुआ विरोधी के बजाए स्वयं को पीडित करके सत्य को प्रमाणित करना।

सत्याग्रह शब्द का प्रयोग प्रायः बडे शिथिल रूप में किया जाता है और उसमें प्रǔछन्न हिंसा का भाव भी शामिल माना जाता है। लेकिन इस शब्द का जनक होने के नाते मैं यह स्पष्ट करने की अनुमति चाहता ता हूं कि इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, प्रǔछन्न या प्रकट, सभी प्रकार की हिंसा वर्जित हैय इसमें मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का कोई स्थान नहीं है। विरोधी को हानि पहुचाने के विचार से उसके प्रतिद्वेषभाव रखना या उससे अथवा उसके बारे में कठोर वचन बोलना सत्याग्रह को तोड़ना है।

सत्याग्रह में शालीनता है, यह कभी चोट नहीं ही पहुचाता। क्रोध या दुर्भावना का परिणाम नहीं होना चाहिए। इसमें बतंगडपन, अधैर्य गा पल कर ह स्थान नहीं है। यह बाध्यता का प्रत्यक्ष विलोम है सकी आम रणा अहिंसा के पूर्ण स्थापना के तौर पर की गई थी।

गांधी जी ने सत्याग्रह को विभिन्न रूपों में पेश किया है जिन स्वरूपों को उन्होंने अपने जीवन में और दुनिया के समक्ष रखा वे निम्न है :–

1- सत्याग्रह एवं प्रतिरोध

हिंसक संघर्ष गांधी के सत्याग्रह आंदोलन न अंतर समझना आवश्यक है। सत्याग्रह और हिंसक संघर्ष या युद्ध दोनों प्रतिरोध की पद्धतियां हैं। प्रश्न उठता है कि जब दोनों ही प्रतिरोध की पद्धतिया है तो उनमें अंतर क्या है? जहां संघर्ष उद्देश्य विरोधी को अधिकाधिक शक्ति पहुंचाना अथवा से पूर्णत नष्ट करना होता है। वहां सत्याग्रह का उद्देश्य विरोधी द्वारा किए जाने वाले अन्याय तथा अत्याचार का अंतः करना ही होता है स्वयं उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुंचाना नहीं है। जब संघर्ष करने वाले व्यक्ति के मन में विरोधी के प्रति क्रोध, घृणा, प्रतिशोध आदि भावनाएं होती हैं। किंतु सत्याग्रह के मन में विरोधी के प्रति स्नेह और सौहार्द पूर्ण भावना निहित होती है। वह विरोधी के दुष्कर्म से
घृणा करता है विरोधी से नहीं। हिंसक संघर्ष करने वाला व्यक्ति अपने विरोधी को कष्ट पहुंचा सकता है। जबकि सत्याग्रही स्वयं अधिकतर कष्ट सहन करके विरोधी का हदय परिवर्तन करके अपना लक्ष्य प्राप्त करता है। हिंसक संघर्ष में व्यक्ति अपनी विजेता और अरे पह पक्ष की पराजय की कामना करता है। लेकिन सत्याग्रही के अंतः करण में इस प्रकार के भाव नहीं होते हैं बल्कि वे केवल सत्य और न्याय की विजय चाहते हैं। अपनी विजय और की पराजय नहीं। उपयुक्त सभी अंतर के अतिरिक्त जो एक महत्वपूर्ण भेद हैं वह यह है कि हिंसक संघर्ष के अंत हो जाने के बावजूद दोनों पक्षों में शत्रुता बनी रह सकती है। परंतु सत्याग्रह की समाप्ति के उपरांत सत्याग्रही अपने सुदव्यवहार दो विरोधी को अपना मित्र बना लेता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सत्याग्रह युद्ध अथवा हिंसक संघर्ष से मुलतः भिन्न है।

2- सत्याग्रह एवं निकिक्रय प्रतिरोध

सत्याग्रह के अर्थ को भली–भांति समझने के लिए, यह ज्ञान लेना आवश्यक है कि सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में क्या अंतर है। सर्वप्रथम 1906 मे महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में गोरे शासकों द्वारा भारतीयों के प्रति किए जाने वाले अन्याय अत्याचार के विरूद्ध अपना अहिंसात्मक आंदोलन आरंभ किया था। उस समय प्रतिरोध वो इसे निष्क्रिय प्रतिरोध ही कहा करते थे। किंतु बाद में उन्होंने अनुभव किया कि उनका यह नामकरण उचित नहीं है। क्योंकि पाश्चात्य देशों में निष्क्रिय प्रतिरोध को केवल असहाय और दुर्बल व्यक्तियों का हथियार माना जाता है। जिसका प्रयोग अपने कष्ट निवारण के लिए शक्तिशाली व्यक्तियों के विरुद्ध करते थे। निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रयोग करने वाले व्यक्ति अहिंसा को नैतिक ȿष्टि से उत्कृष्ट मानकर विवशता दुर्बलता से जन्य मानते थे। इस प्रकार के प्रतिरोध का प्रयोग करने व्यक्ति उपयुक्त परिस्थितियों में अन्याय अत्याचार के निराकरण के लिए हिंसात्मक साधनों का प्रयोग करने में कोई संकोच नहीं करते थे। इस प्रकार निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रयोग करने वाले व्यक्ति सत्य और अहिंसा को नैतिक सिद्धांत मानकर अपनी सफलता के लिए व्यावहारिक साधन मात्र मानते थे। जिनका सुविधानुसार परित्याग किया जा सकता है। गांधीजी के अहिंसात्मक प्रतिरोध की मान्यता इससे भिन्न है। इस कारण गांधी जी अपने इस आंदोलन का निष्क्रिय प्रतिरोध के स्थान पर अन्य नाम ढूंढने का प्रयास करने लगे। तभी श्री मंगल लाल गांधी ने सुझाव दिया कि इस आंदोलन को सदाग्रह की की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार इसे निष्क्रिय प्रतिरोध से पृथक किया गया। गांधीजी अनुभव किया प्रतिरोध में मूल शक्ति का आभास नहीं होता उसकी व्याख्या कमजोर व्यक्ति द्वारा अस्त्र के रूप में की जा सकने की आशंका थी। अतः उन्होंने सत्याग्रह प्रायवाची नही माना है। इस प्रकार सत्याग्रही कायर तथा दुर्बल व्यक्ति का हथियार नहीं है। सǔचा सत्याग्रही वही हो सकता तथा आध्यात्मिक बल के आधार पर स्वेǔछा पूर्वक अधिकतम कष्ट सहन करने की क्षमता हो। ऐसे सत्याग्रही जीवन में किसी प्रकार की दुर्बलता अथवा कायरता के लिए कोई स्थान नहीं है। सत्य पर वही व्यक्ति अडिग रह सकता है। जिसमें नैतिक साहस स तथा बल हो। ऐसा सत्याग्रही निश्चित ही दुर्बल कार्य नहीं कर सकता। गांधीजी कायरता की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठकर मानते थे। उनके विचार में हिंसा करने वाले व्यक्ति से यह आशा जा सकती कभी अहिंसा के अनुसार आचरण करना सीख जाएगा। परंतु कायर व्यक्ति से ऐसी आशा नहीं की जा सकती। दुर्बल एवं कायर व्यक्ति के विपरीत सत्याग्रही पूर्णतया होता है। सत्य पर अटल रहता है।

वह सदा यही कहता है कि मैं संसार में किसी से नहीं डरूंगा, मैं सत्य द्वारा असत्य को पराजित कर लूंगा, घृणा को प्रेम द्वारा तथा अन्याय को न्याय द्वारा पराजित करके मैं सभी व्यक्तियों के प्रति सदैव सदभाव रखूंगा और स्वयं अधिकतम कष्ट सहन कर लूंगा। सत्याग्रह की यह प्रतिज्ञा किसी कार्य की नहीं अपितु से साहसी तथा वीर की प्रतिज्ञा है। इस प्रकार निर्भय होकर सदैव सत्य पर अडिग रहना और केवल अहिंसात्मक उपायों द्वारा सभी प्रकार के अन्याय

अत्याचार शोषण का विरोध करना ही सत्याग्रह की अनिवार्य शर्त है।

3- सत्याग्रह और अनुशासन

गांधीजी अनुसार सत्याग्रही रस रूप से अनुशासित होना चाहिए। सत्याग्रही को कभी भी किसी के भड़काने या भावनाओं से प्रभावित होकर हद्वेलित नहीं होना चाहिए। गांधीजी के अनुसार इसका प्रयोग गंभीरता पूर्वक सोच विचार करके ही करना उचित रहता संकल्प के या बिना निष्ठा के सत्याग्रह का पालन नहीं हो सकता। इसके पालन के लिए कठोर नैतिक एवं अनुशासन और आत्म नियंत्रण की आवश्यकता होती है। सत्याग्रह का पालन केवल उन लोगों के द्वारा ही किया जा सकता है मानसिक स्थिति को प्राप्त कर लेते है। और जिनके मन में सत्य की सर्वोŭचता और उसकी अमोघ शक्ति प्राप्त की
योग्यता सत्याग्रह लिए आवश्यक है कि वह पूर्ण रुप से ईमानदार एवम निष्ठावान हो तथा अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रति समर्पित हो।

अपने संकल्प के प्रति उसमें निष्ठा हो। गांधी जी का कहना है कि सत्याग्रह के लिए खुले मन का होना अनिवार्य है यदि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थवश इस मार्ग पर अग्रसर होता है तो उसका सत्याग्रह सत्याग्रह नहीं हो सकता। गांधी जी कहते हैं कि यदि विपक्षी सत्याग्रह को कई बार धोखा भी दे तो भी सत्याग्रही के मन मे विरोधी के प्रति प्रकार की द्वेष भावना नहीं चाहिए। क्योंकि मानव प्रकृति में आस्था रखना सत्याग्रही का नैतिक कर्तव्य है।

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रही एक पुर्णत व शासित सैनिक कै उसका स्वामी सत्य हैं तथा पथ प्रदर्शक अंतरात्मा है। उसका हार हनी अतः उसे अडिग होना आवश्यक है। किसी सांसारिक शक्ति से उससे भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसे मृत्यु से भी नहीं डरना चाहिए गांधीजी का मानना है कि सत्याग्रही के लिए यह भी आवश्यक है कि वह जीवन के सामान्य नियमों का पालन करता हे, जैसे समय की पाबंदी, व्यवस्था के अनुरूप अगुसार सद्गुण युक्त आचरण आदि। इनसे आत्म नियंत्रण की तथा जीवन व्यवस्थित होता है। गांधीजी सत्याग्रही के लिए अनिवार्य है विश्वास एवं आस्था रखे। वस्तुत सत्याग्रह का संपूर्ण विचार इस विश्वास पर स्थापित है कि ईश्वर एक व्यक्ति में अलग अलग विद्यमान है। यदि ईश्वर में आस्था ना हो तो ऐसा व्यक्ति सŭचे अर्थों में सत्याग्रहीं नही हो सकता ईक में आस्था रहने पर तीस पर तीस सत्य का आग्रह सफल खमसारू सकता है। जहां तक संभव हो सत्याग्रही को से कठिन अपने रास्ते नहीं होना
चाहिए हिए! क्यों सत्याग्रह! एक अहिसक रास्ता है लेकिन वह संघ काही दूसरा मे दस है। इस संघर्ष का नियंत्रण अंत तक अपने हाथ में रखने की कोशिश करनी चाहिए। गाविचार सत्याग्रही को अपने कर्तव्यों के प्रति कर भाप नली ज्वं होना चाहिए। सत्याग्रह करने वाले के मन में भी प्रकार की कृटिल भावना और द्वेष भावना नि खहिए। उसे सभी प्रकार के छल कपट को त्याग कर अपने आचरण में अर्थात कथनी और करनी में एकता
एवं संगतता रखनी चाहिए।

एक सत्याग्रही को अपने कर्तव्य का पालन करते हुई अपने विरोधी को उसकी गलती का एहसास सास करा कर उसे अपना आचरण सुधारने के हिट प्रेरित करना होता है। सत्याग्रही अपने आचरण द्वारा विरोधी के अंतरमन में सभी श्रेष्ठ भावों को जागृत करने की दिशा में प्रयासरत रहता है।

सत्याग्रह और नैतिकता

सत्याग्रह एक नैतिक पद्धति है। गांधीजी के नैतिक विचारों के अर्थ को है सत्याग्रह एक का कृति ति है। द्व अमझने हैः हैत गांधी का चारों के अर्थ को समझना आवश्यक है। नैतिकता पर गांधी भीर कया बात । गांधीजी के नैतिकता संबंधी विचार सत्याग्रह के मूल में निहित क्योंकि सत्याग्रह कि तिजिस पर कार्य करती है वह प्रक्रिया नैतिक है नैतिक आचार के बिना सत्याग्रही अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। सामान्यत नैतिकता की अवधारणा द्वारा व्यक्ति को कर्तव्य अकर्तव्य तथा उचित अनुचित चित का बोध होता हैं। मन मनुष्य का नैतिक उत्तरदायित्व जिसके कारण हम नैतिक ṣष्टि से उसकी प्रशंसा या निंदा करते है। अनंत वह इसी संकल्प स्वतंत्रता पर आधारित है। गांधीजी के अनुसार सŭची नैतिकता मनुष्य की आंतरिक प्रेरणा से उत्पन्न होती है।
ऐसी नैतिकता प्रचलित परंपराओं रीति रिवाज तथा किसी प्रकार के भय पर आधारित न होकर मनुष्य के स्वतंत्र निर्बाध अंतःक्रण पर ही आधारित होती है रब मनुष्य मनुष्य प्रलोभन और भय दोनों से डक होकर केवल अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए कोई कर्म करता है तभी उसके कर्म को नैतिक माना जाता। इसलिए गांधीजी ने कहा कि सŭची नैतिकता परंपरागत मार्ग का अनुसरण करने में नहीं अपितु स्वयं अपने लिए सत्य का मार्ग रग खोजने और निर्भय होकर उसकी ओर अग्रसर होने में है। जो कर्म अपनी स्वतंत्र इŭछा से नहीं किया गया उसे कार कहा जा सकता। कर्म तो आत्मा की आवाज है जिसमें स्वार्थ प्रलोभन या किसी प्रकार के दबाव के लिए कोई स्थान नहीं है। गांधी जी
द्वारा की गई नैतिकता की यह व्याख्या दार्शनिक ṣष्टि से निश्चित ही उचित और संतोषजनक है। उनका महान कर्म सत्याग्रह इसी सत्ता नैतिकता पर आधारित है। जिस प्रकार नैतिकता का उद्देश्य व्यक्ति और समाज नो के हित में स सिम चित सामंजस्य उत्पन्न करके दोनों के कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करना है। उसी प्रकार

सत्याग्रह सत्याग्रही और सौहार्द पूर्ण सामंजस्य स्थापित करने का अथक प्रयास ही हैं। यह सिद्धांत समाज में सामंजस्य स्थापित कर कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। इनका कार्य मनुष्य में व्याप्त स्वार्थ ही व्यकि ओ तथा प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर सभी में पारस्परिक सौहार्द पूर्ण वातावरण स्थापित करना है। अपनी निकृष्ट इंच्छाओं पर विजय प्राप्त करने की आंतरिक भावना और आत्मीय शक्ति के कारण ही पशु से भिन्न हैं। इसी में उसके जीवन की सार्थकता एवं महत्ता है जो की नैतिकता ही उसे प्रदान कर सकती है। यही कारण है कि गांधी जी ने नैतिकता को मनुष्य के जीवन तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति का मूल आधार माना है। गांधी जी यह मानते थे कि मु ने अब तक जो प्रगति की है उसका मूल कारण उसकी नैतिकता ही है। यह नैति नैतिकता ही स्वार्थ पूर्ण प्रवृत्तियों कसर में निस्वार्थ सेवा की भावना उत्पन्न करती है और यह थे सेवा ही मनुष्य में परस्पर सहयोग एवं स्थापित करके समाज के अस्तित्व को बनाए रखती हैं। इस प्रकार समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्वार्थपरकता, प्रलोभन आदि को नैतिक ईतत्वों से युक्त सत्याग्रह के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है।

5.सत्याग्रह एवं अहिंसक प्रतिकार

अहिंसक सके प्रतिकार का उपयोग आत्मरक्षा के लिए शीतलतम ब्रह्मास्त्र की तरह काम करेगा। आज के अणु यू सहारे से अपने ही बल के द्वारा सर्व साधारण मनुष्य को आत्मरक्षा करने की शक्ति अगर शीतलम ब्रद्मास्त्र से ही प्राप्त होने की संभावना हो तो आत्मा उद्धार के लिए भी ऐसी अस्त्र का प्रयोग करना श्रेष्ठ होगा।

शीतलतम् ब्रहस्त्र से सत्विकतम क्षात्र साधना की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं अहिंसक प्रतिकार जो सत्याग्रह का ही स्वरूप हर इसमें आत्म बलिदान से अन्याय का प्रतिकार करते हैं। सत्याग्रह ग्रह मन में कहता है कि अन्याय बर्दाश्त करना मेरे उचित नहीं है उस उसका विरोध करूंगा विरोध करते जो भी भी कष्ट सहन करना पड़ेगा वो मुझे स्वीकार है इस तरह बैक मुकाबले के अंत में सत्याग्रही मे अहातज दा होता है। और वह तेज काफी बाद सत्यागही श्वास पैदा होता ब्रह्मतेज का उपयोग कर सकता हूं। स्वामी विवेकानंद ने
एक जगह का है कि तमोगुण से ऊपर उठकर सत्त्व गुण मे प्रवेश करते समय कभी–कभी बीच की मंजिल के तौर पर रजोगुण आ जाता है।

सत्याग्रह की विशेकाताएं

गांधीजी प्रतिपादित सत्याग्रह के सिद्धांत की विशेषताएं इस प्रकार है–

1- सत्य

सत्याग्रह का मार्ग सत्य, अहिसा सा एवं प्रेम का है। सत्याग्रही को स्वयं मे यह
पूर्ण विश्वास (हीना चाहिए ए कि बह सा सत्य के लड़ रहा है तथा पति नस का पका होना चाहिए। गाँधी जी का मत था न सामाजिक क्रियायें सत्य पर आधारित होनी चाहिए। गांधी का मानना है कि जो हमारी आत्मा कहे वही सत्य है लेकिन प्रश्न पैदा होता है कि सभी व्यक्तियों की अन्तरात्मा की आवाज सत्य हो सकती है?गांधी जी इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों दर क लोगों की अन्तरात्मा की आवाज एक दूसरे से भिन्न हो पर वह सत्य है– चरम सत्य ही । इस प्रकार एक सत्य दूर का असत्य हो सकता है। यदि चरम एवं ईश्वरीय सत्य का ज्ञान प्राप्त करना सत्य का लि गांधी जी ने कहा, सत्य केवल शब्दों की सत्यता ही नहीं बल्कि विचारों की सत्यता कि भी है और हमारी अवधारणा का सापेशिक क सत्य ही नहीं है बल्कि निरपेक्ष सत्य वर । गांधी जी सत्य को निरपेक्ष सत्य के रूप में ग्रहण करते हैं। सत्य का पर्यायवाची मानते सत्य निष्ठा है। हमारे अस्तित्व का एकमात्र औचित्य हमारी समस्त सत्य पर केन्ति होनी । सत्य ही हमारे जीवन का प्राण तत्व होना चाहिए। सत्य के बिना व्यक्ति अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता, यह जरूर हो सकता हि लिसफलता मिल जाये लेकिन आन्तरिक शान्ति प्राप्तु नहीं होगी।

गांधी जी ने कहा, मैं सत्य का एक विनम्र श गीधक हूँ । इसी जन्म में मैं आत्म साक्षात्कार के लिए, मोक्ष प्राप्त करने के लिए आतुर हूँ। करो गण गूंगी जनता के हृदय श्वर के सिवाय किसी ईश्वर को नहीं जानता। लोग अपने अन्दर ईश्वर नहीं। मैं पहचानता हूँ। इन लाखों करोड़ों लोगों की सेवा के द्वारा मैं सत्य रूपी परमेश्वर की पूजा दाह गाधी जी सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य के रूप में मानते हैं। सत्य हमेशा हितकर और आनन्दयुक्त है। इसमें शोक या अहित के लिए कोई स्थान नहीं है। सत्य से चित्और आनन्द का अनिवार्य संबंध है। चित्का आशय ज्ञान है। इसलिए सत्य का सुख–आनन्द भी शाश्वत होता है।

सत्य का क्षेत्र केवल सत्य बोलने तक ही सीमित नहीं है। गांधी जी ने सत्य के
क्षेत्र का विस्तार किया। वे वाणी के सत्य ही सत्य नहीं मानते, अपितु उनके सत्य के विचार और आचार का सत्य भी सम्मिलित है। गांधी जी ने हि य हि सत्य के बल पर टिकी हुई असत्असत्य के माने है– ष्नहीं – सत्–सत्य जहाँ आसत्अथवा अस्तित्व ही नहीं

जो सत्अर्थात्है। उसका नाश कौन कर सकता है। बस इसी में सत्याग्रह का समस्त शास्त्र समाविष्ट है। सत्य स्वभाव से ही प्रकाशमय है जैसे ही अविद्यारूपी आवरण हट जायेगा वैसे ही सत्य रूपी सूर्य प्रकाशित हो उठेगा।

इसलिए सत्यान्वेषण के लिए आत्म–विश्लेषण और आत्मशुद्धि आवश्यक है। गांधी जी का विचार था कि

सत्य निष्ठा पर अडिग रहने के लिए आपेक्षित शक्ति उन्हें अपनी नैतिक श्बुद्धता तथा काम–

क्रोध आदि कर शत ओं, शत्रुओं को अपने से दूर रखने से मिली। इससे ड्रष्टि और निर्णय दूषित नहीं हो सके। यही कारण था कि वे अन्य की अपेक्षा अपनी समस्याओं के आधारभूत सत्य को अǔछी तरह देखा और समझा। इसके साथ–साथ अपनी खामियों– लो को भी अहसूस रस करते थे और नि. रूप से अपनी प्रतिष्ठा की परवाह नही करते हुए सार्वजनिक रूप से कर मनुस्मृति में कहा गया है– ष्सत्य बोलना भी एक बड़ी कला है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नित्य एवं अविराम साधना सेही संभव है जो व्यक्ति अपनी वाणी पर के पुजारी नहीं रख सकता वह सत्यव्रत का पालन नहीं कर सकता। गांधी जी ने कहा– अनुभव ने मुझे सिखाया है कि सत्य के के लिए मौन उसके आध्यात्मिक 20: का एक अंग अंग जाने–अनजाने बढ़ा–चढ़ाकर कहने के दबा देने की या कम–ज्यादा कर देने की वृत्ति मनुष्य की कमजोरी है और मौन इस पर दी पाने के लिए जरूरी टी हिसा विरोधी के प्रति घृणा या हिंसा की अनुमति नही देता क्योंकि इसका उद्देश्य विरोधी का जे परिवर्तन करना है न कि उसका दमन करना। वस्तुतः सत्य और अहिंसा एक दूसरे से अत्यधिक घनिष्ठ रूप से जुड़े है कि उन्हें अत अलग नही किया जा सकता। अहिंसा साधन है और सत्य साध्य। अहिंसा गांधीजी के जीवन और दर्शन का
एक अंग था।

उनका विचार था कि जिस प्रकार पर स साम्राज्य द्य ज्य में हिंसा एक आवश्यक कानून है, उसी प्रकार अहिंसा मानव समाज का मूल आधार है। अहिंसा का १ अर्थ बल प्रयोग करके किसी को मारना लेकिन गांधीजी ने अहिसा ईसा शब्द का अर्थ बहुत व्यापक
रूप से लिया है। उन्होंने अहिंसा को आध्यात्मिक और बवीथ अहिसा ईसा शक्ति के रूप वर्णित किया है। उनके अनुसार, अहिंसा का अर्थ किसी भी तरह से विचारों या शब्दों के माध्यम से किसी को नुकसान पहुंचाना या नुकसान पहुंचाना नहीं है। गांधीजी के विचार में, दूसरों के बारे में बुरा सोचना या कठोर भाषणखा व्यक्ति अलसी ईसा में विश्वास करता है, वह से भी नफरत नहीं करता और किसी अपना दुश्मन नहीं मानता। गांधीजी के विचार में, अहिंसा न केवल एक नकारात्मक अवधारणा है, बल्कि यह एक सकारात्मक अवधारणा भी है। जबकि इसका मतलब दूसरों को नुकसान पहुंचाना नहीं है, कि पे यह दूसरों का भला करने का भी संकेत है।

बलिदान

प्रेम व्यय का आधार होता है। प्रेम की सफलता बलिदान और तपस्या पर निर्भर होती है। बलिदान तथा तपस्या का तात्पर्य है कष्ट तथा यातनाएँ सह 7 सहन करना और आत्मपीड़ा मे भी संतुष्ट रहना। ऐसी तपस्या करने वाला व्यक्ति दुःख मृत्यु से डरता नही है। वह निडर होकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है। गांधी जी ने इस सम्बन्ध मे कहा हैश सत्याग्रह को वैयक्तिक रूप से कष्ट सहन करना है।

सत्याग्रह की प्रविधियां या साधन सविनय अवज्ञा

इसका अर्थ है विनम्रतापूर्वक आज्ञा की अवहेलना करना। गाँधीजी इसे सशस्त्र
क्रांति का रक्तहीन रक्तहीन रूप बताते है।

सविनय अवज्ञा हृदय से आदरपूर्ण तथा संयत होनी चाहिए साथ ही उत्तम सिद्धांतों पर होनी चाहिए। इसके पीछे घृणा और शतता ता की भावना नही नही होनी चाहिए।

सविनय अवज्ञा तभी मानी जा जब तह सǔचे हृदय से की ताप, आदरभाव लिए हो, संयमित हो, कभी उद्धत रूप हु ण न करे, सिद्धांतों पर स्वेǔछाचारिता के दोष से मुक्त हो और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है धो बे कप या घृणा की भावना न

सन 933 में गांधी जी ने अवज्ञा आंदोलन चलाया था सविनय अवज्ञा का अर्थ अहिंसा और विनम्रता के साथ कानून को भंग करना और सत्याग्रही को चाहे कितनी ही बड़ी सजा दी कानों वह कभी धैर्य से पीछे नही हटता है और स्व व को नहीं छोड़ता है। सविनय अवज्ञा का उद्देश्य आज अनैतिक कानूनों को अहिंसात्मक ढग से करना और गांधी जी का कथन है कि यह तभी नही जब सत्याग्रही में सǔचाई हो, वह संयमित मत हो,
यु शासित हो और किसी भी प्रकार की वह दुर्भावना से प्रेरित नहीं हो सत्याग्रही में विरोधी को प्रेम से जीतने की कला जल सविनय अवज्ञा असहयोग की अंतिम सीढ़ी बड़ा भयावह कप । गांधी जी ने इसे सबसे प्रभावशाली सशस्त्र क्रांति का रक्तहीन रूप कहा है। वे कहते हैं सविनय अवज्ञाकारी को हृदय से आदर पूर्वक एवं संयमित होना चाहिए तथा इसके पीछे शत्रुता एवं द्वेष भावना नहीं होनी चाहिए।

2- असहयोग

यह सत्याग्रह का प्रमुख अस्त्र है। गांधी जी असहयोग आन्दोलन 920 मे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध चलाया था।

अंश मार्ग पर लाने हेतु उसके साथ सहयोग बन्द करना असहयोग है। बुराई को दूर करने का यह अहिंसात्मक हथियार है।

असहयोग जनसाधारण में अपनी गरिमा और शक्ति की भावना जागृत करने का
एक प्रयास है। यह तभी संभव है जब उन्हें यह ज्ञान कराया जाए कि यदि वे अपनी अंतरात्मा को पहचान सके तो उन्हें पथ बल बल से डरने आवश्यकता नहीं रहेगी। असहयोग बुराई में अनजाने और और अनिŭछापूर्वक बुक भागीदारी करन विरुद्ध किया गया प्रतिवाद है। बुराई के साथ असहयोग करना उसी प्रकार मनुष्य का कर्तव्य व्य जिस प्रकार अŭछाई के साथ सहयोग योग करना। असहयोग कोई निष्क्रिय स्थिति ही है। यह अत्यंत सक्रिय स्थिति है। हिंसक प्रतिरोध या हिंसा से सक्रिय निष्क्रिय प्रतिरोध पक गलत संज्ञा है और असहयोग शब्द का प्रयोग मैंने जिस अर्थ में किया है उसमें इसका अलिसिक ईसक होना आवश्यक है। और इसलिए यह ना तो दंडात्मक है और ना द्वेष इेभविना ना अथवा घृणा पर आधारित हैं।

गांधी जी का यह कहना था शाहस पूर्वक यह कह सकता भगवत गीता अंधकार और प्रकाश की शक्तियों के बीच सहयोग का सिद्धांत है। यदि दि सी शा शाब्दिक व्याख्या की जाए तो सउद्देश्य का प्रतिनिधित्व करने वाले अर्जुन को अन्याय कौरवों के साथ युद्ध कर करने के लिए आदेश दिया गया था।

सभी धर्मों में जिस प्रकार न्याय प्रिय व्यक्तियों तथा राजाओं के साथ सहयोग करना मनुष्य का कर्तव्य बताया गया है

उसी प्रकार अन्यायई व्यक्तियों और राजाओं के साथ असहयाग योग करने का आदेश दिया गया है । वस्तुत विश्व अधिकांश धर्म ग्रंथ असहयोग से भी आगे बढ़कर यह कहते सामने नपुसंकओ की तरह घुटने टेक देने से हथियार उठा लेना बेहतर है। हिंदू
धार्मिक परंपरा में असहयोग केक को स्पष्ट रूप से सिद्ध किया गया है।

प्रबमाद ने अपने पिता से, मीराबाई ने अपने पति से और विभीषण ने अपने अत्याचारी भाई से असहयोग ही तो कियाथा।

3.हिजरत

सत्याग्रह की एक और प्रणाली हिजरत या स्वेŭछा से अपने देश अथवा निवास स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाना है। ऐसे व्यक्ति जो अन्याय से पीड़ित हो एवं आत्म–सम्मान की रक्षा करते हुए उस स्थान पर न सकते हो बे हिजस जरत का प्रुयोग कर सकते है। 928 मे करबन्दी आन्दोलन मे बारडोली के किसानों पर जब शत्याचार गये तो गाँधी जी ने उन्हें हिजरत करने की सलाह दी। अतएव किसान पड़ौस के बड़ौदा राज्य चले गये।

हिजरत का अर्थ है अन्यायी शासक और उसके द्वारा है बनाए गए अनैतिक कानून के विरोध में स्वेŭछा से उस देश या स्थान को छोड़कर चले जाना। स्थाइ निवास से दूसरी जगह चले जाना हिजरत कहलाता है। गाधी जी ने उन लोगों को घर छोड़ने की अनुमति दी जो लोग अत्यंत दुख का अनुभव करते हैं। और एक स्थान पर आत्मसम्मान के साथ नही रहुसकते की उस शक्ति की कमी है जो सŭची अहिंसा से प्राप्त होती है, जो हिंसा से पुर्ण ढंग से अपनी रक्षा नही कर सकते।

गांधीजी ने सन 928 ई.मे लिम्बडी, संवर्ण हिन्द एवं विढढलगढ़ के सत्याग्रहीयों को घर छोड़ने की सलाह दी थी।सन 935 उन्होंने द्वारा आतंक एवं भय फैलाने के कारण अपना घर छोड़ने की सलाह। गाधी जी ने 8 अनेक लोगों को विरोध करने की सलाह दी थी जिनमें न सŭचे अहिंसा की शक्ति थी और ना त्सादवारा अपनी रक्षा करने की क्षमता थी गां अनुसार हिजरत प्रारंभ करने से पहले यह निश्चित रूप में तय कर लेना अनिवार्य है कि अन्य कोई मार्ग नहीं है। प्रारंभ के अनुरूप स्थापित उपयुक्त सभी साधनों के अतिरिक्त अधिकारी वर्ग से संपर्क करना चाहिए श्ए जनमत का समर्थन प्राप्त करना चाहिए। अपने पक्ष की बातों को स्पष्ट रूप से उनके सामने प्रकट करना

तथा जन समर्थन के साथ अधिकारी या स्थापित तंत्र से संपर्क स्थापित करना
यदि यह सभी तरीके विफल हो

जाए तभी के बारे में सोचना चाहिए 4. सामाजिक बहिष्कार

गाँधी जी के अनुसार सामाजिक बहिष्कार की अवधारणा अत्यंत व्यापक है ।

यदि वैयक्तिक drष्टि से देखें तो सामाजिक हि कार कार एक ऐ ऐसी विधि है हि जिसका प्रयोग सरकार या उन के विरुद्ध करना पार जनमत की उपेक्षा करते हो। सामाजिक तथा संदर्भ मे बहिष्कार का तात्पर्य उन विदेशी वस्तुओं का करना है मिस शा देश की ग्रामीण उद्योगों के नष्ट हो जाने का खतरा हो। गांधी जी के अनुसार बहिष्कार अहिंसक ढंग से व दर्भाव ना रहित होना बहिए।

गांधीजी बहिष्कार की संज्ञा देते हैं। उन । उन्होंने बहिष्कार को ऐसा कठोर अस्त्र माना है जिसका प्रयोग मर्यादा में रहकर ऋकर किया जा सकता है। गांधीजी के. के विचारों को व्यक्त करते हुए डॉक्टर गोपीनाथ राव ने लिखा है. गांधीजी ने बहिष्कार को अपने सत्याग्रह में में बहुत कम स्थान दिया है और तभी उसके लिए समर्थन दिया है जब स्का कुत ऋत कम व्यक्ति बहुमत से से न्यीचित बात या मत को मानने से इंकार कर दें। लेकिन उनमें प्रतिबंध भी लगा

बहिष्कृत व्यक्ति द्वारा पका ए गए कष्ट से बहिष्कार करने वालों की सहानुश् प्रभूति होनी चाहिए और कष्ट के लिए दुख का अनुभव होना चाहिए का तात्पर्य यह नहीं है कि बहिष्कृत को आवश्यक सेवाओं से वंचित ह्यि दिया जाए उसको खाना या कपड़ा पहनने से रोका जाए चिकित्सा सुविधा से वंचित किया जाए ऐसा करना कार गांधीजी ने बहिष्कार का प्रयोग विदेशी चीजों, न्यायालयों, सरकारी नौकरियों, विद्यालयों, उपाधियों आदि को त्याग क्र किया। स्वयं गांधी जी ने रोलेट एक्ट के विरोध में उन्हें प्राप्त केसरे हिंद पदक का बहिष्कार किया।

हड़ताल

हड़ताल का आशय किसी अन्याय का प्रतिकार करने के लिये सारे व्यापार और करोबार तथा दुकानों और कार्यालयों को बंद रखना है। इसके द्वारा सरकार के सामने जन–सामान्य की आवश्यकताओं और कष्टों या समस्यों को सरकार के सामने प्रकट किया जाता है। श्रमिकों के जायज दुःखों को दूर करने का यह प्रभावी साधन है। पर इसका उपयोग शांतिपू जी एवं अहिंसक तरीके से होना चाहिए गां हड़ताल का उद्देश्य जनता और सरकार के मन को प्रभावित करना बताया है। वश दा मा में लाभ वहीं लिए हड़ताल करना मजदूरों का विष अधिकार कप पूंजीपति पंच का मान ले तो वहीं हड़ताल को अपराध समझ लिया जाता है। १ हड़ताल उन्हीं तक सीमित रहनी रहनी चाहिए जिन्हें वह कष्ट और वे उन कष्टों को दूर करना चाहते हो। विरोध स्वरूप कार्य को स्वेúछा पूर्वक बंद करने को हड़ताल कहते हैं।

हड़ताल एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा व्यक्तियों का समूह समाज अपने भावों को प्रकट कर सकता है। अर्थात जनता के दुख दर्द को प्रकट करने का माध्यम है। यह सरकार के कार्य के प्रति अपनी असहमति या अप्रसन्नता प्रकट करने का तथा लोगों में जागृति लाने का सर्वोत्तम साधन द्य हड़ताल जनता के दुख दर्द को प्रकट करने का

माध्यम है।

राष्ट्र की राय प्रकट करने का यह तरीका विराट सभाओं की अपैक्षा के अधिक प्रबल है।

सत्याग्रह हड़ताल मे जोर जबरदस्त लूटमार र बुंडागदा गु ख्डागदी या आतंक का काई स्थान नहीं है। यह स्वúछ अंतरूकरण पधिारित नस ही होने से ही सफल हो अन्याय और शोषण का विरोध करने के लिए सत्याग्रही युवाओं को विशेष में हड़ताल की अनुमति प्रदान करते इसका प्रयोग अपवाद स्वरूप ही करना चाहिए हडताल ए हड़तालें में किसी भी प्रकार का दबाव अनुचित है। अन्य साधनों की भांति हडताल भी अल्सात्मक इसात्मक ही होनी करने वाले सत्याग्रहयों का लक्ष्य स्वयं दुख झेलकर अन्याय और शोषण करने वाले व्यक्तियों का हदय करना चाहिए। स्ल प्रकार का कष्टे न हो।

हड़ताल का उद्देश्य समाज का कल्याण ही होना चाहिए किसी एक या समुदाय का हित नहीं । समाज को हानि पहुंचाने वाली संकुचित स्वार्थ से प्रेरित हड़ताल के लिए सत्याग्रह स्थान नहीं है। गांधीजी का विचार है कि सत्याग्रह अनुरूप प अहिंसात्मक हड़ताल भी कभी–कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में ही की जानी चाहिए। बार–बार हड़ताल करने से उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है और समाज को भी हानि पहुंचती है

धरना

धरना वह तर तरीका है जिसके द्वारा समाज–विरोधी कार्यों के प्रति व्यापकजनमत्तैयार करना है जिसके माध्यम से कार्य करने वाले व्यक्ति के हृदय को बदला जा सके। गाँधी जी ने शराब बंदी तथा विदेशी वस्तुओं के उपयोग को रोकने के लिये सत्याग्रह के इस साधन का व्यापक उपयोग किया।

7. उपवास

यह सत्याग्रह का अंतिम साधन है। जब समस्त उपाय बेकार ना नह तभी इसका प्रयोग होना ऐसा गाँधी का कहना है। उपवास का अभिप्राय केवल अन्न ग्रहण न करना अपितु सभी तरह रखना उपवाल हैं द्य इसका प्रयोग आत्मशुद्धि, पश्चाताप, हित और अन्याय के प्रति पापियों के हृदय परिवर्तन के लिये किया जाना चाहिए एक बार किसी ने उपवास को लेकर तंज की भाषा में गांधीजी को ही लिखी थी. इसमें लिखा गया था, आजकल तो अनशन की हवा चल पड़ी है और उसका दोष आप हीं को दिया जा सर ! सका जवाब देते हि हरिजनबन्धु के 2, अप्रैल, 946 के अंक में

गांधीजी ने लिखा– श्... अनशन में एक नकल करने की गुंज़ाइश ही नहीं है. जिसके हृदय में बल नहीं रु उपवास हरगिज न करे और फल की आशा से भी वह उपवास न करे. जो फल की आशा रखकर उपवास करता है वह हारता है और यदि वह हारता नजर नहीं भी आ रहा हो, वह उपवास के आनन्द को खो बैठता है. हास्यास्पद अनशन होते रहें और महामारी की तरह अनशन का रोग फैल जप तो भी जहा द्य उपवास करना पर्ग है वहाँ उसका त्याग नहीं किया जा सकता.

गांधी ने आगे था– उपवास संघर्ष का एक अंग बने, इसके खिलाक लोगों के स्वाभाविक पूर्वग्रह है. धार्मिक कार्यों में इसका ज्क सर्वमान्य स्थान राजनीति में आम भ7ा
क्षेपक समझते यह मानता अपने उपवास हमेशा सत्याग्रह के कड़े नियम के अधीन गल उपवास का आश्रय लिया जा सकता है उन सबकी छानबीन करके और उपवास हि

आवश्यक प्रशिक्षण की चर्चा करके मैं इस लेख को लंबा 8, नहीं द करना चाहता. अपने क्रियात्मक पक्ष परोपकार पदक रूप मैंने जान–बूझकर श्परोपकार शब्द का प्रयोग किया का नहीं, क्योंकि श्प्रेमश शब्द की अब वह प्रतिष्ठा नहीं) अहिंसा सा सबसे बड़ी शक्ति है. क्योंकि उससे अपकारी को किसी प्रकार की शारीरिक या भौतिक हानि बा का इरादा किए बिना, आत्म–पीड़न का इतना अवसर मिलता है जिसकी हद नहीं. इसमें ध्येय हमेशा
यही रहता को डा उत्तम गुणों को जगाया जाए.

आगे उन्होंने लिखा, आत्म–पीड़न उपवास करने वाले की दैवी वृत्तियों को जगाता है, जबकि प्रतिशोध उसकी आसुरी वृत्तियों को जा है. उचित उचित परिस्थितियों में उपवास इस तरह की सर्वश्रेष्ठ अपील है. अगर राजनैतिक मामलों में राजनीतिज्ञ को उपयोगिता नहीं दिखाई देती, हे अर इसलिए कि इस बढ़िया शस्त्र का प्रयोग अनूठा है.

इसलिए मैं शुद्ध राजनीतिक वृत्ति रखनेवाले ध करूंगा कि वे अहिंसा का और उसकी चरंम अभिव्यक्ति उपवास का सहानुभूति और समझ के साथ अध्ययन

सत्याग्रही के नियम

सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग बड़ी सावधानी और बुद्धिमता के साथ उस समय करना चाहिए। जब शांतिपूर्ण तरीके से अन्याय का प्रतिकार करने के अन्य साधनों को विफल हो चुका हो। अन्याय को दूर करने से पहले ले प्रार्थना करनी चाहिए। जनता को शातिपूर्वक रा अपने पक्ष का समर्थन करना चाहिए। इस विषय मे आम जनता मे अनुकूल मत जागृत करने का प्रयास करना । इन उपायों के विफल होने पर तथा जनमत तैयार करने के बाद ही सत्याग्रह आरंभ करना चाहिए। सत्याग्रह आरंभ करने से पूर्व अपनी न्यूनतम मांग निश्चित कर लेनी चाहिए ए। इस मांग को पूरा करने का आग्रह करना चाहिए तथा घोर अत्याचार और दमन होने पर भी इस मांग के पूरा होने तक आंदोलन जारी रखना चाहिए। सत्याग्रही का काम विरोधी को हराना या नीचा दिखाना नही है वरन उसका हृदय परिवर्तन करके उसे अपने अनुकूल बनाना है। शत खेŭकापूर्वक कष्ट सहने से तथा अपनी बात पर दृढ़ता की डटे रहने से ही विरोधी का हृदय परिवर्तन होता है। गांधी जी ने कहा है कि सत्याग्रह मे अपनी ही बलि होती है एक सत्याग्रही प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा दिए गए दण्ड को अंगीकार करता है। इनसे बचने के लिए भागने या छिपने का प्रयास नही करता है।

सत्याग्रही के लिए विशिष्ट नियमों का पालन करना अनिवार्य है। ये नियम गाँधी जी के अनुसार इस प्रकार है––

1- एक सत्याग्रही व्यक्ति के लिए ईमानदार हीना आवश्यक है। हिंसा

2- एक सत्याग्रही को मन, वचन तथा कर्म से अपने शत्रु के प्रति भी हिंसा का भाव नही रखना चाहिए। उसमे प्रत्येक कष्ट सहन करने की असीम क्षमता होनी नी चाहिए।

3- किसी भी परिस्थिति मे उसे किसी भी व्यक्ति पर क्रोध नही करना चाहिए।

4- सत्याग्रह को किसी भी परिस्थिति मे अपने विरोधी का अपमान नही करना चाहिए।

5- जब काई अधिकारी सविनय आज्ञा भंग करने वालों को पकड़ने आयेगा तो वह स्वयं गिरफ्तारी देगा एवं उसका प्रतिकार नही करेगा।

6- संघर्ष मे यदि कोई किसी अधिकारी का अपमान करता है अथवा उस पर हमला करता है तो सत्याग्रही अपने को संकट मे डालकर भी उस अधिकारी की रक्षा करेगा।

7-स्थानीय चेतना जागृत करने के लिए किसी खास बुराई के विरुद्ध या आत्मबलिदान के रूप में सत्याग्रह किया जा सकता है जैसे कि चंपारण में किया गया था।

8- सत्याग्रह सत्ता प्राप्त करने के लिए नही सता कोड शुद्ध करने और उसका सदुपयोग करने के लिए होता है।

9- सत्याग्रह की जड़ मनुष्य स्वभाव पर शाम रखने में है।

10- सत्याग्रह का नियम प्रेम का नियम है जो कि एक शाश्वत नियम है।

11- सत्याग्रह की खूबी है कि वह खुद हमारे पास चला आता है हमें उसे खोजने नहीं जाना पड़ता यह गुण उसके त में समाया हुंआ है।

12- सत्याग्रह तो बल प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है हिंसा के संपूर्ण ण त्याग ॅड़स सत्याग्रह की कल्पना की गई है।

13- यह याद रखना चाहिए कि सत्याग्रह अगर संसार की सबसे गे ताकत है बसे लिए दिल में क्रोध और भाव रखे बगैर अधिक से अधिक कष्ट सहन न करने की क्षमता गाआवश्यक है। ने

14- अतः जो अतिया कभी भी अपने विरोधी को अपमानित नहीं करेगा और इस प्रकार की किसी गतिविधि में भाग नहीं की भावना के खिलाफ हो डा

15- सत्याग्रही सबका मित्र होता है शत्रु किसी का नहीं होता सफल सत्याग्रही की यह पहली शर्त है।

सत्याग्रही के गुण

1- उसे शारीरिक श्रम तथा रचनात्मक कार्य करते रहना चाहिए। रचनात्मक कार्यों से गांधी जी का अर्थ है–साम्धदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, नारी जागृति, बेसिक शिक्षा, खादी एवं ग्रामोद्योग का विकास, राष्ट्रभाषाकार्यक्रम आदि।

2- एक सत्याग्रही की ईश्वर मे अटूट आस्था होनी चाहिए, क्योंकि गांधी के विचार मे वही सिर्फ एक अटूट आधार है।

3- एक सत्याग्रही व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र मे अहिंसा का पालन करना

चाहिए। दूसरों के सुख–दुःख को सदेयो अपना सुख–दुःख मानना चाहिए द्य

4- उसे हर समय ष्सत्यष के मार्ग पर चाहिए। सत्य की खातिर बलिदान करने के लिए भी उसे तत्पर रहना चाहिए। उसके का परम लक्ष्य ही ष्सत्य होना चाहिए।

5- शुद्ध उन शासित जीवन एक सत्याग्रही की महत्वपूर्ण विशेषता है। आँकि, को सभी प्रकार के व्यसनों से डूना चाहिए। साथ ही नशीली वस्तुओं का प्रयोग नही करना । इसुसे उसकी बुद्धि निर्मल एवं अचंचल द्य

इस तरह गाँधी जी के ष्सत्याग्रहष सम्बन्धी विचार अत्यंत व्यापक ςष्टिकोण लिए हुए लिए हर है। ये विचार केवल आदर्शवादी नहीं है ड पी जी ने ष्सत्याग्रहष को आचरण मे लाकर न केवल वर्न्समूचे विश्व के सम्मुख आदेश प्रस्तुत किया

सत्याग्रही की योग्यताएं ने योग्यताएं

1- गांधी जी के अनुसार सत्याग्रही में... निम्नलिखित योग्यताएं होनी चाहिए। उसे ईश्वर में जीती–जागती आस्था होनी चाहिए, क्योंकि वही तो ना चाहिए मौत्र अवलंब है।

2- उसे सत्य और महिला अहिंसा को अपना धर्म मानते हुए उनमें विश्वास रखना चाहिए पीर इसी कारण, उसे मानव–प्रकृति वह निहित रत् में भी आस्था होनी चाहिए उसे आशा रखनी बा एकिव अŭछाई को अपने पीड़ा–भोग के सत्य तथा प्रेम की अभिव्यक्ति जगाने में कामयाब होगा।

3- उसे! ए उसे पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने ध्येय की पूर्ति के लिए अपने जीवन और अपनी संपत्ति को करने के लिए तैयार तथा इŭछुक रहना चाहिए। 4. वह आदतन खादी धारण करने वाला तथा चरखा कातने वाला होना चाहिए ।

भारत के संदर्भ में यह आवश्यक है।

5- वहू मा मद्यत्यागी और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्त होना चाहिए ताकि उसका विवेक सदा जागृत रहे।

6- वह समय–समय पर निर्धारित अनुशासन के नियमों का स्वेŭछा से पालन

करे।

7- उसे जेल के नियमों का पालन करना चाहिए, सिवा उन नियमों के जो उसके

आत्मसम्मान को चोट पहुंचाने के विशेष रूप से बनाए गए हों।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का सत्याग्रह :

गांधीजी के निःस्वार्थ कार्यों और वहाँ जमी वकालत को देखते हुए तो ऐसा लगने लगा था कि जैसे वह नाताल में बस गये हों। सन् 896 के मध्य में वह अपने पूरे परिवार को अपने साथ नेताल ले जाने के उद्देश से भारत आये। अपनीइस यात्रा के दौरान उनका लक्ष्य दक्षिण के भारतीयों के लिए देश में यथाशक्ति समर्थन पाना और जनमत करना भी था।

राजकोट में रहकर गर उन्प्रवासी भारतीयों की समस्या पर पक पुस्तक स्तक लिखी और उसे छपवाकर देश के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रतियाँ भेजी। इसी समय राजकोट में फैली महामारी प्लेग अपना उग्र रूप धारण कर चुकी थी। गांधीजी स्वयंसेवक बनकर अपनी सेवाँए देने लगें। वहाँ की दलित बस्तियों में जाकर उन्होंने प्रभावितों की हर संभव सहायता अपनी यात्रा ता व दौरान उनकी ख्मुलाकात् त्देश के प्रखर नेताओं से हुई। ब । बदरुद्दीन तैय्यब, सर फिरोजशाह मेहता, सुरेंनाथ लोकमान्य जिलक, गो गोखले आदि के का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन सभी के समक्ष उन्होंने प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को रखा। सर फिरोजशहा मेहता की अध्यक्षता में गांधीजी द्वारा भाषण देने का कार्यक्रम बंबई में संपन्न हुआ। इसके बाद कलकत्ता में गांधीजी द्वारा एक जनसभा को संबोधित किया जाना था। लेकिन इससे पहले कि वे ऐसा कर पाते, दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों का एक अत्यावश्यक तार नह आया।

इसके बाद वे अपनी पत्नी और बŭचों के साथ वर्ष 896 के नवंबर महीने में डरबन के लिए रवाना हो गये।

भारत में गांधीजी ने जो कुछ किया और कहा उसकी सही रिपोर्ट जो नाताल नहीं पहुँची। उसे बढ़ा–चढ़ाकर तोड़–मरोड़ कर वहाँ पेश किया गया, इसे लेकर वहाँ के गोरे वाशिंदे गुस्से से आग बबलाह ला हो उठे थे। हा नामक जहाज से जब गांधीजी नाताल पुचे तो वहाँ के गोरों ने उनके साथ अभे व्यवहार रों । उन पर और कंकड़ पत्थर की बौछार होने लगी। भीड़ ने उन्हें लात– री से पीटा। अगर पुलिस सुपरिंटेंडट की पत्नी ने बीच–बचाव न किया होता तो उस दिन उनके प्राण पखेरू उड़ गये होते। उधर लंदन के उपनिवेश मंत्री ने गाँधीजी पर हल करने वालों कार्रवाई करने के लिए नाताल सरकार को तार भेजा। गांधीजी ने ओरपियों को पहुचाने चानने से इंकार करते हुए उनके विरुद्ध कोई भी कारवाई न करने का अनुरोध किया। गांधीजी ने कहा, ष्वे गुमराह किये गये हैं, जब खुहे सॅचाई का पता चलेगा तब उन्हें अपने किये का पश्चाताप खुद होगा । मैं उन्हें
क्षमा करता हूँ।ष ऐसा लग रहा था जैसे ये वाक्य गांधीजी के न होकर उनके भीतर स्पंदित हो रहे महात्मा अपनी दक्षिण ण्अफ्रीका की दूसरी यात्रा के बाद गांधीजी अद्भुत व ऋत बदलाव आया। पहले वे अँग्रेजी बैरिस्टर के माफिक थे। लेकिन अब वे मितव्ययिता को अपने जीवन देने लगे। उन्होंने अपने खर्च और अपनी आवश्यकताओं को कम कर दिया। गांधीजी ने श्जीने की कला सीखी। कपड़ा इत्री करने कपड़ा सिलने आदि काम वे खुद करने लगे। वे अपने बाल खुद काटते। साफ–सफाई भी करते। इसके अलावा वे लोगों की सेवा के लिए भी समय लेते। वे प्रतिदिन दो घंटे का समय एक चौरिटेबल अस्पताल ! ल जहाँ वे एक कंपाउंडर की हैसियत से काम करते थे। वे अपने दो बेटों के साथ–साथ

वर्ष 899 में बोअर–युद्ध छिड़ा। गांधीजी सहानुभूति बोअर के साथ थी जो अपनी आजादी के लिए लड़ थे। गांधीजी ने सभी भारतीयों से उनका सहयोग देने । उन्होंने इकट्ठा किया और डॉ. बूथ मद से भारतीयों एक एंबुलेंस टुकड़ी बनाई। इस टुकड़ी में ,00
स्वयंसेवक थे जो कि सेवा के लिए तत्पर थे।

टुकड़ी का कार्य चाल का भाल में जुटना था। गांधीजी के नेतृत्व में सभी स्वयंसेवकों ने अपनी अमूल्य दीं। गांधीजी जाति, धर्म, रूप, रंग भेद से दूर रहकर केवल मानवता की सेवा में जुटे थे। उनके इस कार्य की प्रशंसा में वहाँ के समाचार पत्रों ने खबा लिखा।

1901 में युद्ध समाप्त हो गया। गांधीजी ने भारत वापसी का मन बना लिया था। शायद कहे दक्षिण अफ्रीका में ने अॅछी सफलता मिली थी, लेकिन वे श्रूपयों के पीछे न भागने लगें इस भय के कारण भारत आने के पक्ष थे। लेकिनकिन न नाताल के भारतीय डे सरलता से छोड़ने वाले नहीं थे। आखिर इस शर्त पर उन्हें इजाजत दी गई कि यदि साल–भर के अंदर अगर उनकी य आवश्यकता आ पड़ी तो वे भारतीय समाज के हित के लिए पुनः लौट आयेंगे।

वे भारत लौटे। सबसे पहले कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सभा में शामिल हुए। यह पर पहली बार सह ऐसे लगा जैसे भारतीय बोलते अधिक हैं और काम कम करते हैं। गोखले के यहाँ बाद भारत यात्रा के लिए निकल पड़े। उन्होंने तीसरे दर्जे के डिब्बे में यात्रा करने का निश्चय ताकिवे लोगों हरी) की के साथ–साथ स्वयं भी उसके मुख्य ढल सकें। उन्हें इस बात दुख हुआ कि तीसरे दर्जे में भारतीय रेल अधिकारीयों डा काफी लापरवाही बरवी जाती है। इसके इलावा यात्रियों की गंदी आदतें भी डिब्बे की दुर्दशा के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार अब गांधीजी भारत में ही रहना चाहते थे। बम्बई लौटकर उन्होंने अदालत में काम करने की कोशिश की, लेकिन ईश्वर को कुछ मंजूर था। दक्षिण ण अफ्रीका के भारतीयों को उनकी जरूरत आ पड़ी। ष्जोसेफ चौम्बरलेन दक्षिण बा आ कृपया जल्द लौटें।ष दक्षिण अफ्रीका के भारतीय डर भेजे गये इस तार को पाते ही गांश

अपने वचन का पालन करते हु वहाँ लिए चल पड़े। भारतीयों के लिए जोसे जोसेफ के मन पिणा और उपेक्षा की भावना थी। उसने घोषणा कर भारतीयों को वहाँ रहना है तो यूरोपीय लोगों को श्संतुष्टश रखना ही होगा।

भारतीयों की समस्याओं को लेकर गांधीजी चौम्बरलेन किलु गांधीजी को निराश होना पड़ा। इसके बाद गांधीजी ने जोहान्सबर्ग में रहकर वहाँ के सुप्रीम कोर्ट में वकालत के लिए प्रवेश लिया। यहाँ रहकर उन्होंने अन्याय के खलाफ आवाज बुलंद की यहाँ के जुलू युद्ध से उनके मन में उपजा था उसने उनके निजी असमंजस–ह्मचर्य को सुलझा, दिया था। उन्हें लगा कि अब समय आ गया है कि उन्हें जीवन भर रकिरण व्रत ले लेना चाहिए। गांश लिए इस व्रत का अर्थ न केवल शरीर की शुद्धि से था, अपितु बहू म मन के श शण का भी माध्यम था, और वे वर्षों तक अपने चेतन या अचेतन मस्तिष्क जी आनंद के नामों–निशान को मिटाने के लिए संघर्ष करते रहे।

गांधीजी ने सुबह उठते ही गीत ह उठते ही गीता पढ़ने का नियम बना रखा था।
वे उसके विचारों का अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने लगे। श की जो बात गीता में की गई है, उसे उन्होंने अपने भीतर आत्मसात करने का निश्चय किया। गीता के बाद रसकिन की पुस्तक श्अन टु दी लास्टश का गहरा प्रभाव उन पर पड़ा। इस पुस्तक का अध्ययन में अपना योगदान दिया गांधीजी फीनिक्स में अधिक दिनों की दर टिके। वे सर न्सबर्ग गये, जहाँ बाद में उन्होंने एक आदर्श कॉलनी, की स्थापना की, जो बनियादी द्य से बीस मील की दूरी पर थी इसका नाम श्टालस्टाय फार्म रखा। अमर भारत में आज बड़ी तेजी से शिक्षा की जो जड़ें जमाती जा रही हैं, उसको टालस्टाय फार्म में बड़ी विकसित किया गया था। एक बार जब फीनिक्स बस्ती में एक श्नैतिक भूल का पता चला, तो गांधीजी ने अपना सभी सामाजिक कार्य बंद कर दिया और वे ट्रंसवाल से नाताल चले गये। जहाँ युवाओं के पाप का प्रायश्चवित करने के लिए उन्होंने सात दिन का उपवास रखा।

ट्रंसवाल की सरकार ने एक कानून बनाने की घोषणा की थी, जिसके मुताबिक आठ वर्ष की आयु से अधिक के हर भारतीय को अपना पंजीकरण कराना होगा द्यगा। उसकी अंगुलियों के निशान लिये जायेंगे और उसे प्रमाण पुत्र लेकर हमेशा अपने पास रखना होगा। 92 8 ने इस काले कानून का विरोध किया। लोगों को जुटाकर सभाएँ की। जनवरी 1908 में गाँधीजी को

नके अन्य द्य के साथ दो महीने के लिए जेल भेज दिया गया।

इसके बाद जनरल स्मटस्ने गांधीजी के सामने प्रस्ताव रखा – यदि भारतीय स्वेửछा से पंजीकरण करवा लेंगे, तो अनिवार्य पंजीकरण का कानून रद्द कर दिया जाएगा। समझौता हो गया और स्मटस ने गांधीजी से कहा कि आजाद हैं। जब गांधीजी ने अन्य भारतीय बंदियों के बारे में पूछा तब जनरल ने कहा कि बाकी लोगों को अगली सुबह रिहा कर दिया जायेगा। गांधीजी जनरल के वचन्को सत्य मानकर जोहान्सबर्ग लौटे इधर स्मटस ने अपना वचन भंग कर दिया। इसे लेकर भारतीय आग बबूला हो उठे। जोहान्सबर्ग न्सबर्ग में 6 अगस्त 1908 को विशाल सभा हुई, जिसमें काले कानून के प्रति विरोध प्रदर्शित करते हुए लोगों ने प्रमाण पत्रों की जलाई। गांधीजी खुद ये का उल्लघन करने के लिए आगे बढ़े। एक बार फिर 10 अक्तूबर 1908 को वे गिरफ्तार हुए । इस बार उन्हें के कठोर श्रम कारावास की सजा सुनाई गई। गांधीजी का संघर्ष जारी था। फरवरी

1909 में एक बार फिर उन्हें गिरफ्तार कर तीन महीने ने के कठोर कारावास की सजा दी गई। इस बार की जेल यात्रा में वाचन किया। यहाँ वे नित्य प्रार्थना भी करते थे न 9 में गोखलेजी दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर आये। बोअर जनरलों ने गांधीजी और गोखले से भारतीयों के खिलाफ अधिक भेदभाव बाली कुट्यवस्था ओ को समाप्त करने का वादा किया। लेकिन व्यक्ति कर की व्यवस्था बंद नहीं की गई। गांधीजी संघर्ष के लिए तैयार हो गये। महिलाएँ जो अब तक आंदोलन में सक्रिय नहीं थीं, गांधीजी आवाहना पर उठ खड़ी हुई। उनमें बलिदान की मशाल जल उठी। अब सत्याग्रह नये तेवर के रूप में

सामने आ रहा था। श्रय किया कि महिलाओं का पुक जत्था कानून की धज्जियाँ अड़ाते हुए ए ट्रंसवाल से नाताल जायेगा।

हु भी बिना कर दिये। महिलाएँ इस संघर्ष यज्ञ में बढ़–चढ़कर शामिल हुईं। उनकी कस्तूरबा भी इसमें शामिल इस कानून को तोड़ने का प्रयास कर रहीं महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी के मार्गदर्शन में कई जगह को द्य अहिंसा का मार्ग अपनाते हुए गांधीजी ने अपना सत्याग्रह शुरू किया। गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। कई सत्याग्रही कमर कस चुके गांधीजी का सत्याग्रह रंग ले चुका था। कई लोगों ले अपनी गिरफ्तारीयाँ दीं। पुलिस और भुखमरी के बावजूद सत्याग्रही अपने मार्ग पर अटल थे।

गांधीजी का सत्याग्रह एक अचुक ह हथियार सिद्ध हुआ। अंततः समझौता हुआ और ष्भारतीय राहत विधेयक पास हुआय कानून में यह प्रावधान किया गया कि बिना अनुमति भारतीय एक पंत से दूसरे से दूसरे प्रांत में तो नहीं जा सकते, यहाँ जन्में भारतीय केप कॉलनी में जाकर रह सकेंगे। अलावा इसके पद्धति को वैध घोषित किया गया। अनुरंधित बंधित श्रमिकों पर से व्यक्ति कर हटा लिया गया, साथ ही बकाया रह कर दिया गया।

सब दक्षिण दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का कार्य पूर्ण हो हो चुका था। 8 जुलाई 94 को वे गोखले के जुलावे पर समी मार्ग से पत्नी के साथ इंग्लैंड रवाना ना हुए। ना हुए। जाने से पहले जेल में भजन गरा बनाई ई गई चपलों की जोड़ी स्मटस को भेंट दी। जनरल स्मटस ने इसे वर्षों तक पहना। बाद में लिखा, ष्तब से मैंने कई गर्मियों में इन चपलों को पहना है, हालांकि मुझे यह अहसास है कि इतने महान की मैं किसी प्रकार बराबरी नहीं कर सकता।

भारत में सत्याग्रह की शुरुआत.

गांधीजी अप्रैल 893 में दक्षिण अफ्रीका गये थे। जनवरी 95 में महात्मा बनकर वे भारत लौटे। अब उनके जीवन का एक ही मकसदथा – लोगों की सेवा। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में लोकप्रिय थे, उतना भारत में नहीं, क्योंकि अभी तक उनका संघर्ष, सत्याग्रह, आंदोलन दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों के लिए ही सीमित था।

रवींदनाथ `नाथ टगौर ने इस महात्मा त्मा की भारत वापसी का स्वागत करते हुए शांति निकेतन में आने का निमंत्रण भी दिया।

गांधीजी शांति निकेतन और भारतीय परिस्थिती से ज्यादा परिचित नहीं थे। गोखले की इửछा थी कि गांधीजी भारतीय राजनीति में सक्रिय योगदान दें। अपने राजनीतिक गुरू गोखले को उन्होंने वचन दिया कि वे अगले एक वर्ष भारत में रहकर देश के हालात त का अध्ययन करेंगे। इस दौरान श्केवल उनके कान खुले रहेंगे, मुँह पूरी तरह बंद रहेगा। एक तरह से यह गा मौन व्रत था।

वर्ष की समाप्ति के समय अहमदाबाद स्थित साबरमती नदी के तट के पास आकर बस गये। उन्होंने इस सुंदर जगह पर साबरमती आश्रम बनाया। इस आश्रम की स्थापना उन्होंने मई 95 में की थी। वे इसे सत्याग्रह आश्रम कहकर संबोधित करते थे। आरंभ में इस आश्रम से कुल 25 महिला–पुरुष स्वयंसेवक जुड़े। जिन्होंने सत्य, प्रेम, अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इन स्वयंसेवकों ने अपना पूरा जीवन श्लोगों सेवा मेंश बिताने का निश्चय कियागांधीजी का श्मौन व्रतश समाप्त हो चुका था। पहली बार भारत में गांधीजी सार्वजनिक सभा में भाषण देने के लिए तैयार थे। 4 फरवरी 96 के जप लि विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में छात्रों, प्रोफ़ेसरों, महाराजाओं और अंग्रेज अधिकारीयों की उपस्थिति में भाषण दिया। इस अवसर पर वाइसराय वा राय भी स्वयं उपस्थित था। एक हिल रा य विश्वविद्यालय के उद्घाटन्समेरोह में अंग्रेज़ी भाषा विवशता पर खेद प्रकट करते हुए आषण की शुरू शुरूआत. ग फियल भारतीय राजाओं की तड़क–भड़क, शानो–शौकत, हीरे–जवाहरातों तथा

धूमधाम द्य खर्ची की चर्चा की। उन्होंने कहा.श्एक ओर तो अधिकांश भारत यूं मर और दूसरी ओर इस तरह पैसों की बर्बादी की

जा रही है।ष उन्होंने सभा में बैठी राजकुमारीयों द्य के गले में पड़े हारे णबाहुरातों हुए 7 श्इनका उपयोग तभी है, जब ये भारतवासियों की दरिता देर करने के काम आयें।श कई राजकुमारीयों और अंग्रेज अधिकारीयों ने सभा का बहिष्कार कर दिया। उनका भाषण देश भर में

चर्चा का विषय बन गया था।

भारत में गांधीजी का पहला सत्याग्रह बिहार 7 के चम्पारन में धर रू हुआ। वहाँ पर नील की खेती करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। अंग्रेजों खुब शाषण पे द्य उपर से कुछ बगान मालिक भी जुल्म छा रहे थी गाांधीजी का जायज़ा धर पुलिय । उनके दुर्शन ए हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी। किसानों ने अपनी सारी समस्याएं बताई। उधर पुलिस हरकत में आ गई सुपरिटेंडट ने गांधीजी को जिला छोड़ने का आदेश दिया। आदेश इंकार कर दिया। अगले दिन गांधीजी को कोर्ट में हाजिर होना था। हज़ारों बाहजमा थी। गांधीजी के समर्थन में नारे लगाये जा रहे थे। हालात की गंभीरता को देखते हुए मैजिस्ट्रेट ने बिना जमानत के गांधीजी को छोड़ने का आदेश दिया। लेकिन गांधीजी ने कानून के अनुसार सजा की माँग की।

फैसला स्थगित्कर दिया गया। इसके बाद गांधीजी फिर अपने कार्य पर निकल पड़े। अब उनका पहला उद्देश लोगों को श्सत्याग्रहश के मूल सिद्धातों से परिचय कराना था। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने की पहली शर्त है – डर से स्वतंत्र लिएम गांधीजी ने अपने कई स्वयंसेवकों को किसानों के बीच में भेजा। यहाँ किसानों के बच्चों को शिक्षित करने ग्रामीण विद्यालय गये। लोगों को साफ–सफ़ाई से रहने का तरीका सिखाया गया। सारी गतिविधियाँ गांधीजी के आचरण से मेल खाती थीं। स्वयंसेवकों ले मैला ढोने, धुलाई, झाड़ू–बुहारी तक का काम किया। लोगों को उनके अधिकारों का ज्ञान कराया गया।

चंपारन के इस गांधी अभियान से अंग्रेज सरकार परेशान हो उठी। सारे भारत का ध्यान अब चंपारन पर था। सरकार ने मजबूर होकर एक जाँच आयोग नियुक्त क्त किया, गांधीजी को भी इसका सदस्य बनाया गया।। परिणाम सामने था।

कानून बनाकर सभी गलत प्रथाओं को समाप्त कर दिया गया। के लाभ के लिए नील की खेती करने वाले किसान अब अपने जमीन के मालिक बने। गांधीजी ने भारत में सत्याग्रह की पहली विजय का शंख फूँका। चम्पारन ही भारत में सत्याग्रह की जन्म स्थली बना।

गांधीजी चंपारन में ही थे, तभी अहमदाबाद के मिल मजदूरों द्वारा तत्काल साबरमती बुलाया गया। मिल–मजदूरों के खिलाफ मिल–मालिक कठोर कदम उठाने सारहे पक्षों के बीच गांधीजी को करानी थी। जाँच–पड़ताल पक्षों से बातचीत करने के बाद गांश मजदूरों के पक्ष में गया। मिल–मालक मजदूरों को आश्वासन लिए तैयार न थे। इसलिए गांधीजी ने मजदूरों का उत्साह घटता गया और हिंसा की आशंका 4 । गांधीजी ने इसे बनाये रखने के लिए खुद उपय उपवास पर बैठ गये। इसके बाद मालिकों और मजदूरों का एक बैठक हुइ जिर जिसमें बातचीत करके समस्या हो ल गया और हड़ताल समाप्त हो गई।

मा के खेड़ाँ ज़िले के किसानों की फ़सलें बरबाद हो चुकी थी। गरीब किसानों को सरकार द्वारा लगान चुकाने के लिए दबाव डाला ज़ा रहा था। गांधीजी ने खेड़ा जिले में

एक गांव से दूसरे गांव तक की पदयात्रा आरंभ की। गांधीजी ने श्सत्याग्रहश का आवाहन किया। उन्होंने किसानों से कहा कि वे तब तक सत्याग्रह के मार्ग पर चलें, जब तक सरकार उनका लगान माफ करने की घोषणा न करें। चार महीने तक यह संघर्ष चला। इसके बाद सरकार ने गरीब किसानों का लगान माफ करने की घोषणा की। गांधीजी एक बार फिर सफल हुए

गांधीजी के सत्याग्रह की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

वर्तमान प्रशासन में गांधी का सत्याग्रह प्रासंगिक इसलिए है कि प्रशासन की ज्यदातियों के विरुद्ध यह एक नैतिक शास्त्र हैं जो प्रशासनिक पदाधिकारियों को अन्यायपघर्ण र्ण कानूनों को समाप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

गांधी जी का कहना था कि प्रशासनिक अत्याचार और शोषण लोगों के सहयोग के उत्पन्न होता है। यदि जनता प्रशासन के अन्याय पूर्ण तरीकों का असहयोग भी करे तो अन्याय की समाप्ति और सकती है। जन असहयोग के तरीके हू जे टला जैसे– सामाजिक बहिककार ष्कार और धरना। हड़ताल के अंतर्गत प्रशासन के गलत कार्यो के विरोध के ख्यमें कार्य को बंद कर देते हैं। प्रशासन के अन्याय पूर्ण नीतियों के विरोध में

धरना देते हैं। गांधी जी ने कहा था कि हड़ताल प्रशासन के 20 अपने वैध कष्टों को दूर करने का श्रमिकों के अधिकार में एक शस्त्र है जिसके माध्यम से वे समाज में परिवर्तन हैं। गांधीजी का सत्याग्रह प्रशासन के विरुद्ध एक जन आंदोलन है जिसका प्रयोग आज भ्रष्ट प्रशासनिक अधिकारियों के खिलाफ किया जा सकता है। जब प्रशासन के स्तर पर अन्याय के कानूनों का विरोध करना है तब गांधीजी के सत्याग्रह का प्रयोग आवश्यक हो जाता हु । गांधीजी की मान्यता हैं जब शांति से अन्याय का प्रतिकार करने के अन्य साधनों का प्रयोग विफ़ल हो गी चुका तब सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिए। प्रशासन के स्तर पर अन्याय को दूर करने से पहले जनता को शांतिपूर्वक

युक्तियों द्वारा अपने पक्ष का समर्थन करना चाहिए और अन्याय पूर्ण के विषय में प्रशासन के खिलाफ जनता में मत जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। इन उपायों के विफल होने पर तथा जनमत तैयार करने के बाद ही.

प्रशासन विरुद्ध सत्याग्रह। आरंभ करना चाहिए हिए से सत्याग्रह के त्याग्रह के माध्यम से प्रशासन से अपनी न्युनतम मांग निश्चित कर लेनी चाहिए। यदि सŭचे अर्थ में प्रशासनिक अन्यायों का करना सत्याग्रह के माध्यम से सिर्फ प्रशासन का इन्यायबूर्ण प्रमुख कानुनों का विरोध किया जा सकता है। सत्याग्रह की माध्यम से प्रशासन के साथ संवाद स्थापित करके समस्या का निदान खोजना चाहिए १ प्रशासन के धरना का अर्थ गांधीजी के विचार में जन निंदा द्वारा प्रशासन कर्मियों को लज्जित करना और सचेत करना है। के विचार में सविनय अवज्ञा सशस्त्र क्रांति रक्तहीन रूप है। जिसका उद्देश्य प्रशासन और राज्य सरकार के अनैतिक नियमों को तोड़ना है। परंतुइसके अंतर्गत घृणा और शत्रुता की भावना नहीं रहनी ले श्ए। आज प्रशासन के स्तर पर अनैतिक ज नियमों गाँधीजी का सविनय अवज्ञा सर्वोत्तम अस्त्र है। उनका उपवास सत्याग्रह का अग्निबाण है जो सार्वजनिक जीवन की शुद्धि के के लिए ए एक आवश्यक शर्त है। गांधी के उपवास के माध्यम से बड़े पैमाने पर आज भी प्रशासन की कमियों को दूर करने के लिए अधिकारियों को विवश किया जा सकता है यदि उपवास में उŭच कोटि की पवित्रता नम्रता और अटल विश्वास को शामिल किया जाए तो जनहित में प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। गांश कहा है कि हड़ताल वैध कष्टों को दूर करने का प्रशासन के विरुद्ध श्रमिकों के हाथ में एक शस्त्र हैं जिसके माध्यम से वे समाज में परिवर्तन चाहते हैं। ये तथ्य स्पष्ट करते हैं कि गांधी का सत्याग्रह प्रशासन के अनैतिक नियमों के विरुद्ध सिर्फ एक साधन नहीं है। वरन्प्रशासन को अपनी मंजिल सुशासन तक पहुंचाने का जरिया भी है।

महात्मा गांधी के सत्याग्रह को युद्ध के नैतिक विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने आम जन को यह सिखाया सत्याग्रह का प्र का प्रयोग समस्या तथा संघर्ष के समाधान हेतु किस प्रकार किया जाता है। गांधी का सत्याग्रह राजनीतिक मुय र हेत एक प्रभावी साधन साबित हुआ है। युद्ध और शांति, आतंकवाद, मानवाधिकार सतत विकास, सो लबायु सामाजिक–राजनीतिक अशांति और राजनीतिक–प्रशासनिक भ्रष्टाचार से संबंधित समकालीन चुनौतियों में से कर को गांधीवादी तरीके से हल किया जा सकता है।अतरू 2वीं सदी के लोगों के पास अभी भी गां से सीखने के लिये बहुत कुछ सीखना बाकी है।

निककर्का

नि की सा गा कर का का ही बन अतिसा और सत्याग्रह एक दूसरे न के पूरक दान और प्रशासन की सफलता आवश्यक ही नहीं वरन्अनुपालन पालन से प्रश कशलता पारदर्शिता में वृद्धि होती है। गांधीजी के सत्याग्रह की मान्यता मनुष्य के हाथ में शक्ति होती और असहयोग द्वारा शक्ति छोड़ने के लिए विवश किया जा सकता है । गांधी जी ने कहा था कि प्रेम और सत्य के बल पर तथा अहिंसा का अस्त्र धारण कर एक सत्याग्रह पक्ष में कर लेता है जो वर्तमान प्रशासन के में लागू पीता है । जब एक सत्याग्रह दे खनन् उस वसुधैव ला का आदर्श हो तो सत्य और अहिंसा को अंगीकाकर स्तर पर प्रशासन हर जिम्मेदार बनाया जा सकता है। गांधी जी के सत्य अहिंसा और सत्याग्रह से एक भ्रष्ट पदाधिकारी को चरित्र बल से ईमानदार बनने तथा सन्मार्ग पर चलने के लिए विवश किया जा सकता है। अन्यायपूर्ण नियमों के विरोध के लिए आज भी गांधी जी का उपवास अनशन धरना हड़ताल एवं प्रदर्शन जिसका समाधान प्रशासन में सुधार लाकर ही किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- शेखर गुप्ता – लोक प्रशासन "भारतीय लोक प्रशासन संस्थान नई दिल्ली की अर्धवार्षिक शोध पत्रिका। पृष्ठ 237–240, 242
2- सुनीता मौर्य– गांधी सत्याग्रह और विश्व शांति। पृष्ठ 5–78
3- एल कमल –गांधी चिंतन। जयपुर पब्लिकेशन ह्ज्स पृष्ठ –2
4- आर.के प्रभु और यू .आर राव– महात्मा गांधी के मुंबई सर्वोदय मंडल द्वारा प्रकाशित 994 पृष्ठ 69–
5- गांधी जीवनी –मुबई सर्वोदय मंडल द्वारा पृष्ठ 5,6 6. गांधी ई बुक्स
7- जी.जी. देसाई – सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका द्वारा पृ. 5,6
8- डण्ज्ञ ळंदकीप जीम जवतल व िउल मगचमतपउमदज ूपजी जतनजी ंरंचंस च्नइसपीपदह 2 थ्मइ 2021
9- डॉ. मनोज कुमा रबहरवाल – भारतीय राजनीतिक चिंतक हिमांशु पब्लिकेशन उदयपुर 2014 पृ. 397
10- ओम प्रकाश गाबा – भारतीय राजनीतिक विचारक मयूर पेपरबैक्स इंदिरापुरम 2017 पृ. 257–261